जामिया दर्पण

जामिया मिल्लिया इस्लामिया

वर्ष–5, अंक–3, दिसंबर 2022

जामिया दर्पण

राजभाषा हिंदी प्रकोष्ठ, जामिया मिल्लिया इस्लामिया की पत्रिका
वर्ष–5 अंक–3, दिसंबर 2022

संरक्षक
प्रो. नजमा अख़्तर, कुलपति

प्रधान संपादक
प्रो. नाज़िम हुसैन जाफ़री, कुलसचिव

परामर्श समिति
प्रो. इब्राहीम, डीन, छात्र कल्याण
प्रो. चन्द्रदेव सिंह यादव, हिंदी विभागाध्यक्ष
डॉ. जय प्रकाश नारायण, संस्कृत विभागाध्यक्ष

संपादक
डॉ. राजेश कुमार 'माँझी'

संपादन सहयोग
डॉ. यशपाल
कनीज फ़ातिमा
नदीम अख़्तर

संपादकीय कार्यालय
राजभाषा हिंदी प्रकोष्ठ
कुलसचिव कार्यालय,
जामिया मिल्लिया इस्लामिया
नई दिल्ली–110025
दूरभाषः 011–26981717 एक्स. 1223
ई–मेलः hindicell@jmi.ac.in
वेबसाइटः www.jmi.ac.in

पत्रिका में प्रकाशित लेखकों के विचार से विश्वविद्यालय अथवा संपादक मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

अनुक्रम

कुलपति का संदेश			
कुलसचिव का संदेश			
संपादकीय			
क्र.	**विषय**	**लेखक**	**पृ.सं.**
1.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तथा जामिया नर्सरी स्कूल	रूखसाना परवीन, निदेशक, जामिया नर्सरी स्कूल	6
2.	नृत्य, साहित्य और कला का अन्तरंग	डॉ. हरप्रीत कौर जस, सहायक प्रोफेसर, शैक्षणिक अध्ययन विभाग	7
3.	पुलिस स्टेशन का एक दिन का रोज़नामचा	मुशर्रफ़ हुसैन, एलडीसी, स्कूल अनुभाग	9
4.	जामिया मिल्लिया इस्लामिया के बारे में		10
5.	डलहौजी की साहित्यिक यात्रा	डॉ. मुकेश कुमार मिरोठा, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग	13
6.	द मीडिया करी / एक मीडिया झोल	मजाज म. सिद्दीक़ी, एजेके–बहुसंचार जनसंचार केंद्र	19
7.	गंगा जमुनी तहज़ीब और जामिया	निशाद उल हक, आउटसोर्स कर्मचारी, पेंशन एवं सर्विस बुक अनुभाग़	20
8.	जीवन के मूल्य एवं शिष्टाचार	नदीम अख़्तर, हिंदी टाइपिस्ट, राजभाषा हिंदी प्रकोष्ठ	21
9.	संस्थागत रैंकिंग में पुस्तकालयों एवं पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका	डॉ. सुफ़ियान अहमद उप–पुस्तकालयाध्यक्ष, डॉ. ज़ाकिर हुसैन पुस्तकालय	24
10.	स्त्री–पुरुष असानमता संबंधी मुहावरे और लोकोक्तियों का पुनरावलोकन	डॉ. अंदलीब अतिथि संकाय, शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग	28
11.	परीक्षा प्रणाली के प्रति एक विचार	डॉ. एरम ख़ान सहायक प्रोफेसर, शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग	30
12.	मन का रावण	डॉ. शादमा यास्मीन प्रशिक्षक, आंतरिक सज्जा, शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग	33
13.	राजभाषा अधिनियम, 1963	राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार	34
14.	मनहूस बिटिया	फिरदौस अज़मत सिद्दीक़ी सहायक प्रोफ़ेसर, सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र	37
15	.प्यार बाँटते चलो	डॉ. अंदलीब अतिथि संकाय, शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग	39
कविताएँ			
16	फिर से	मुमताज़ अली, सहायक, शिक्षा संकाय	12
17.	सैलरी एकाउंट (मध्यवर्गीय)	नितेश दोगने, सहायक प्राध्यापक, वास्तुकला विभाग	12
18.	एक बार फिर	मुमताज़ अली, सहायक, शिक्षा संकाय	23
19.	गज़ल	डॉ. तबस्सुम नक़ी, एसोसिएट प्रोफ़ेसर, शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग	23
20.	फिर वही शाम	मज़ाज म. सिद्दीकी, ए.जे.के.–एमसीआरसी	23
21.	हिन्दुस्तान हमारा	फिरदौस अज़मत सिद्दिक़ी, सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र	31
22.	दर्पण ..... एक आईना	नाज़नीन फ़ातिमा, प्रशिक्षक, शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग	31
23.	ज़िंदा क़ौम	फिरदौस अज़मत सिद्दिक़ी, सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र	32

जामिया मिल्लिया इस्लामिया
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय)
मौलाना मोहम्मद अली जौहर मार्ग, नई दिल्ली-११००२५

JAMIA MILLIA ISLAMIA
(Central University)
Maulana Mohammad Ali Jauhar Marg, New Delhi-110025
(NAAC Accredited A++ Grade)

جامعہ ملیہ اسلامیہ
(مرکزی یونیورسٹی)
مولانا محمد علی جوہر مارگ، نئی دہلی۔۱۱۰۰۲۵

Tel. : 011 - 26984650, 26985180, Fax : 0091-11-26981232 | Email: vc@jmi.ac.in | Web: jmi.ac.in

प्रोफेसर नजमा अख़्तर
कुलपति

Professor Najma Akhtar
Vice Chancellor

پروفیسر نجمہ اختر
شیخ الجامعہ

कुलपति का संदेश

जामिया मिल्लिया इस्लामिया की पत्रिका 'जामिया दर्पण' के तीसरे अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। पिछले वर्षों में कोविड–19 महामारी से जहाँ पूरा विश्व प्रभावित रहा वहीं रचनात्मक गतिविधियाँ भी इससे अछूती नहीं रहीं। इसका प्रभाव 'जामिया दर्पण' पर भी पड़ा, फिर भी समय के साथ सभी कुछ ठीक हो गया और 'जामिया दर्पण' फिर से आपके सामने है। इस पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रति जामिया की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है। मुझे यह कहते हुए गौरव की अनुभूति हो रही है कि 'जामिया दर्पण' में जामिया के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने अपनी रचनात्मक प्रतिभा का बखूबी प्रदर्शन किया है। 'जामिया दर्पण' पत्रिका जहाँ एक रचनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान कर रही है वहीं दूसरी ओर कर्मचारियों को प्रोत्साहित करते हुए राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की दिशा में भी अहम भूमिका निभा रही है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'जामिया दर्पण' के इस अंक में सम्मिलित लेखों, कविताओं, संस्मरणों इत्यादि से पाठक लाभान्वित तो होंगे ही, साथ ही वे अपने कार्यालयी कार्य में राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित भी होंगे। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री के लिए मैं उनके रचनाकारों को शुभकामनाएँ देती हूँ। साथ ही 'जामिया दर्पण' को इस आकर्षक रूप में प्रकाशित करने के लिए राजभाषा हिंदी प्रकोष्ठ को बधाई देती हूँ और पत्रिका के उत्तरोत्तर विकास की मंगल कामना करती हूँ।

नजमा अख़्तर

प्रो. नजमा अख़्तर
कुलपति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया
(केन्द्रीय विश्वविद्यालय) (नैक प्रत्यायित 'A++' ग्रेड)
मौलाना मोहम्मद अली जौहर मार्ग, नई दिल्ली.110025
JAMIA MILLIA ISLAMIA
(A Central University) (NAAC Accredited 'A++' Grade)
Maulana Mohammed Ali Jauhar Marg, Jamia Nagar, New Delhi-110025

दूरभाष Tel. : 26984075, 26988044
26981717, 26985176
फैक्स Fax : 011-26980229
ई-मेल E-mail : *registrar@jmi.ac.in*
वेबसाइट Web. : http://jmi.ac.in

جامعہ ملیہ اسلامیہ

कुलसचिव कार्यालय **Office of the Registrar** دفتر مسجّل

कुलसचिव का संदेश

मुझे ये जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि जामिया मिल्लिया इस्लामिया की राजभाषा पत्रिका 'जामिया दर्पण' का तीसरा अंक प्रकाशित हो रहा है।

आज तकनीक का उपयोग करते हुए हिंदी अधिकाधिक लोगों तक पहुँच रही है और राजभाषा हिंदी का प्रयोग विश्वविद्यालय के कार्यालयी कार्यों में अधिकाधिक हो रहा है। जामिया मिल्लिया इस्लामिया इस दिशा में पीछे नहीं है। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार जामिया मिल्लिया इस्लामिया भी सभी अनिवार्य बिंदुओं पर विशेष ध्यान देता है। इसके अंतर्गत तिमाही बैठकें, कार्यशालाएं, प्रतियोगिताएं इत्यादि शामिल हैं। इससे राजभाषा के कार्यान्वयन को बल मिलता है। 'जामिया दर्पण' पत्रिका का प्रकाशन भी इसी श्रृंखला की एक कड़ी है।

मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास है कि प्रकाशित की जा रही यह पत्रिका पाठकों के लिए अत्यंत उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक सिद्ध होने के साथ-साथ उन्हें महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्रदान करने में काफी सहायक होगी।

नाज़िम हुसैन जाफ़री

प्रो. नाज़िम हुसैन जाफ़री
कुलसचिव

संपादकीय

जामिया मिल्लिया इस्लामिया की गृह पत्रिका 'जामिया दर्पण' के नवीनतम अंक को आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत खुशी हो रही है। पत्रिका के माध्यम से हम सारगर्भित तथा ज्ञानवर्धक सामग्री को साझा करने का प्रयास करते हैं। राजभाषा हिंदी प्रकोष्ठ का यह प्रयास रहता है कि 'जामिया दर्पण' अधिक प्रासंगिक रहे तथा इसका कलेवर नवीनतम हो। इसी को ध्यान में रखते हुए पत्रिका के इस अंक में विविध विषयों पर सारगर्भित रचनाओं को सम्मिलित किया गया है।

मैं जामिया मिल्लिया इस्लामिया की कुलपति प्रो. नजमा अख़्तर साहिबा तथा कुलसचिव महोदय प्रो. नाजिम हुसैन जाफ़री साहब का हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ जिनकी प्रेरणा, प्रोत्साहन एवं कुशल मार्गदर्शन से पत्रिका प्रकाशित हो रही है। मैं राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्यों, जामिया के समस्त प्राध्यापकों तथा प्रशासनिक कर्मचारियों/अधिकारियों के प्रति भी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ जिनके सहयोग से राजभाषा कार्यान्वयन का कार्य सुचारु रूप से आगे बढ़ रहा है।

अंत में मैं उन सभी रचनाकारों के प्रति आभार प्रकट करता हूँ जिन्होंने विभिन्न विषयों पर अपनी रचनाएँ पत्रिका के लिए प्रेषित की हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप रचनाकारों की रचनाधर्मिता 'जामिया दर्पण' को उत्तरोत्तर स्तरीय बनाए रखेगी।

(डॉ. राजेश कुमार 'माँझी')

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 तथा जामिया नर्सरी स्कूल

रुखसाना परवीन*

नई शिक्षा नीति–2020 के तहत 2030 तक शैक्षिक प्रणाली को निश्चित किया जाएगा और वर्तमान में चल रही 10+2 के मॉडल के स्थान पर 5+3+3+4 की शैक्षिक प्रणाली के आधार पर पाठ्यक्रम को विभाजित किया जाएगा। नई शिक्षा नीति का उद्देश्य शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना है।

नए पाठयक्रम की शैक्षणिक संरचना को निम्नलिखित 4 चरणों में विभाजित किया गया हैः–

1. मूलभूत चरण (पूर्व प्राथमिक और ग्रेड 1–2)
2. प्रारंभिक चरण (ग्रेड 3–5)
3. मध्य चरण (ग्रेड 6–8)
4. माध्यमिक चरण (ग्रेड 9–12)

नई शिक्षा नीति के मूलभूत चरण (फाउंडेशन स्टेज) में 3 से 8 साल तक के बच्चों को सम्मिलित किया गया है जिसमें 3 साल की प्री–स्कूली शिक्षा भी समाहित है। इसमें प्रारंभिक शिक्षा को बहुस्तरीय खेल और गतिविधि आधारित बनाने को प्राथमिकता दी गई है।

यहाँ पर यह कहना उचित होगा कि प्री–प्राइमरी शिक्षा जिसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अन्तर्गत स्कूली शिक्षा का एक अंग बनाया गया, उस प्री–प्राइमरी को जामिया स्कूल ने 1955 में प्रारंभ कर दिया था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में खेल पर आधारित पाठ्यक्रम को लागू किया जाएगा जिसे NCERT तैयार करेगी। जामिया द्वारा खेलकूद को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के लिए कक्षा प्रथम की शिक्षिका श्रीमती मुशीर फातमा को मॉंटेसरी शिक्षा पद्धति का प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए लंदन भेजा गया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद श्रीमती मुशीर फातमा ने 1955 में जामिया नर्सरी स्कूल में खेल विधि पर आधारित शिक्षण पद्धति (Play way teaching method) तथा प्रयोजना विधि (Project method) को लागू किया। बच्चों को उनकी आयु के अनुरूप खेल पर आधारित शैक्षिक गतिविधियाँ कराना सुनिश्चित किया गया। बच्चों के समग्र विकास हेतु उनके शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा संज्ञानात्मक विकास पर बल दिया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का एक प्रमुख उद्देश्य बच्चों को प्रारंभ से ही भारतीय संस्कृति से जोड़ना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जामिया नर्सरी स्कूल में राष्ट्रीय त्यौहारः स्वतन्त्रता दिवस, गणतंत्र दिवस, संविधान दिवस, गाँधी जयंती, अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस इत्यादि तथा धार्मिक त्यौहारः दशहरा, दिवाली, होली, रक्षाबंधन, ईद, मकर संक्रांति तथा क्रिसमस इत्यादि हर्ष और उल्लासपूर्वक मनाए जाते हैं। इन उत्सवों के द्वारा बच्चों में सामाजिक सामंजस्य तथा सांस्कृतिक सहृदयता विकसित की जाती है। स्कूल में विभिन्न गतिविधियों को संचालित करने के लिए गीत–संगीत, नृत्य, नाटक, कहानी, कला और शिल्प, कठपुतली, रेत और पानी पर आधारित खेल, मिट्टी की आकृतियाँ बनाना स्कूल की प्रमुख शैक्षणिक पद्धतियाँ हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 प्री–प्राइमरी के लिए स्कूल बैग का वज़न कम करने, गृह कार्य न देने और टेक्नोलॉजी के प्रयोग को प्रोत्साहन देने की बात करती है। ये प्रावधान जामिया नर्सरी स्कूल में 2019 में स्थापित स्मार्ट क्लास के द्वारा पूरा किया गया। नर्सरी की सभी कक्षाओं में स्मार्ट बोर्ड द्वारा बहुआयामी माध्यम से पढ़ाया जाता है। गतिविधि आधारित पाठ्यक्रम, पर्याप्त मात्रा में शिक्षण सामग्री का प्रयोग तथा प्रशिक्षित, अनुभवी व कर्मठ शिक्षकों का बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि जामिया नर्सरी स्कूल राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के प्रावधानों का अनुकरण कर रहा है तथा आगामी वर्षों में इस दिशा में और अधिक अग्रसर होगा।

परिणामस्वरूप जामिया नर्सरी स्कूल में सुयोग्य, समर्थ तथा देशभक्त नागरिकों का निर्माण होगा जो कि जामिया नर्सरी स्कूल का विज़न है और ये नन्हे सच्चे/छात्र निश्चित रूप से देश व समाज की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करेंगे।

*निदेशक, जामिया नर्सरी स्कूल

नृत्य, साहित्य और कला का अन्तरंग

डॉ. हरप्रीत कौर जस*

काव्य को किसी अन्य कला द्वारा प्रस्तुत करने पर क्या परिणाम होंगे, इस विषय पर एक शाम युवा शोधार्थी सुशील द्विवेदी से वार्तालाप हुई जिसमें रुचि मेहरा भी शामिल हुईं। ये दोनों और प्रोफेसर चन्द्रदेव यादव जी त्रिवेणी कला संगम मंडी हाउस, नई दिल्ली स्थित, मेरी कत्थक शैली की नाट्य प्रस्तुति 'आहुत' में शामिल हुए। प्रस्तुति से पहले भी प्रोफेसर साहब के ऑफिस में 'नायिका' के विषय में चर्चा हुई। इन्ही चर्चाओं में 'नवविवाहिता मुग्धा' ने जन्म लिया। प्रोफेसर यादव विद्यापति के अध्येता हैं। चर्चा में विद्यापति की रचनाओं की नायिका रही। जयदेव से प्रभावित होते हुए भी विद्यापति पदावली की नायिका उसकी भाषा के चलते सामान्य और साधारण प्रतीत होती है। मेरी बंदिश की नायिका 'लट उलझी सुलझा जा बालम। हाथों में मेरे मेहंदी लगी है, माथे की बिंदिया बिखर गई है, अपने हाथ लगा जा बालम' (पारंपरिक हिन्दुस्तानी ख़्याल गायिकी की बंदिश है जो राग 'बिहाग' में है) भी सामान्य और लोक में दिखाई देने वाली है पर उम्र से 'मुग्धा' है। मुग्धा अर्थात जिसे यौवन ने अभी छुआ मात्र है, अपने अन्दर युवा अवस्था के कारण हो रहे शारीरिक बदलाव को उसका मन समझ रहा है।

साहित्य या गायिकी की बंदिश को नृत्य में प्रस्तुत करना उस रचना का पुनर्जन्म होता है जिसे नृतकी अपनी कल्पना में रचकर व अपनी भावभंगिमाओं द्वारा दर्शकों के समक्ष रखती है।

रुचि को लगा जहाँ मेरी चाल और भाव बिलकुल युवा लड़की जैसी थी वहीं सुशील के लिए भाव को प्रस्तुत करने में ठहराव की जरूरत महसूस हुई। जहाँ भाव में उम्र की गतिशीलता होनी चाहिए वहीं भाव को स्थापित करने के लिए उसे और खोलने की आवश्यकता है।

यही मीमांसा की कला है। इस सोच को व्यक्त करने के लिए नर्तक के मानस पटल पर चित्र साफ रूप से खिचा होना चाहिए। शरीर की भाव भंगिमाओं द्वारा कहानी कहना मानव जाती की परंपरा है, वहीं शास्त्रीयता में इसे बंधने की अपनी प्रक्रियाः उपयुक्त हस्त मुद्राएँ, चेहरे द्वारा दर्शाई गईं भाव भंगिमाएं, राग का स्वरूप, चाल, हस्तक इत्यादि से होकर नृत्य प्रस्तुति तैयार होती है।

साहित्य और नृत्य का 'देह काव्य'

सुशील का कहना है कि साहित्यकार समाज का अवलोकन कर साहित्य में एक नया समाज रचता है जिसे साहित्य का समाज कह सकते हैं। आलोचक या कलाकार उसे पुनः 'डिकोड' करता है। इसलिए आलोचक या कलाकार और साहित्यकार के बीच भिन्नता दिखाई देती है और यह बात भली–भाँति समझ लेनी चाहिए।

'नायिका' और मनोभाव

नर्तक या कोई कलाकार साहित्य की उस रचना को अपना कर एक नए स्वरूप में जब ढालता है तो इस कोशिश में एक जोखिम भी होता है। यही विरोधाभास मुग्धा नायिका के नवविवाहिता या कुलवंती होने में है। नारीवादी सोच, जो की नारी के उत्पीड़न के लिए समाज के उस दृष्टिकोण जो कि शर्म को उसका गहना मानता है, को जिम्मेदार ठहरती है। इन दोनों पहलूओं की अवहेलना करते हुए मुझे यथार्थ में जीवंत कई नायिकाएं याद आईं। भारतीय समाज और परिवार में पली बढ़ी हर लड़की को गैर पुरुष से एक निर्धारित दूरी बनाए रखने पर जोर दिया जाता है। ब्याह हो जाने पर भी ये शिक्षा उसके साथ रहती है। पुरुष के समीप जाने में शर्म महसूस करना परन्तु विश्वास रूपी एक बंधन से उसकी ओर आकर्षित होना स्वाभाविक है। जहाँ यौवन की कली पुरुष के संपर्क से खिलती है वहीं अल्हड़पन भी झलकता हैः बिना बात शर्म, सामने न आना, मन की बात छुपाना, और बिन कारण मुस्कुराना या रो देना। यही मीठी गुप–चुप बातें दोनों के बीच धीरे–धीरे नायिका को अपने सुन्दर और 'मुग्धा' होने का मान देती हैं। अपने पति या नायक के प्रति आकर्षण व दूरी दोनों उसका मान बन जाता है। एक तरह से वह स्वयं में एक नयापन महसूस करती है। अपने यौवन को पुरुष के संबंध में स्वीकृत देती है पर उसका यौवन और उसकी सक्रिय मनः स्थिति उसके वजूद का हिस्सा है।

*सहायक प्रोफेसर, शैक्षणिक अध्ययन विभाग, शिक्षा संकाय, जामिइ

इन सभी बातों के भाव भंगिमाओं का खास प्रयोजन है। जैसे उसके आंचल का प्रयोग, शर्म के लिए सर और आँखों का झुकना या फिर प्रेम प्रकट करने के लिए मुस्कुराकर देखना। नृत्य मंचन सिखाता है कि हर छोटा हाव भाव कुछ संकेत देता है।

दुनियावी और अलौकिक माँ

'माँ' कविता को कला में परिवर्तित करते हुए भी यही चुनौती थी। 'माँ' श्रीमती शशि पाधा की वह कविता जो उन्होंने अपनी जिन्दगी के उस पड़ाव पर लिखी जहाँ वह बिलकुल अपनी माँ जैसी दिखने लगी थी। यह कविता बेटी की कृति या श्रद्धा सुमन है अपनी माँ के लिए परन्तु दर्शकों तक इसे पहुँचाने के लिए अलौकिक माँ को भी आना पड़ा। श्री अरविन्द आश्रम की 'श्री माँ' की छवि अकस्मात् ही इस नृत्य प्रस्तुति में समा गई। माँ अलौकिक हो या दुनियावी अपने बच्चों की सफलता और खुशी हर तरह से उसके लिए जरूरी होती है।

भाव प्रस्तुति व दर्शकों की प्रतिक्रिया

इन नए प्रयोगों के लिए दर्शकों की प्रतिक्रियाएँ सबसे महत्वपूर्ण रही हैं। उदाहरण के लिए आखरी प्रस्तुति 'माँ' में जिस चुनरी का प्रयोग किया, वही चुनरी एक दर्शक को 'मूक हुई माँ' प्रतीत होती है, वहीं दूसरे को सिर्फ माँ के आँचल की विशालता दिखी।

ऐसी कई प्रतिक्रियाएं नर्तक की सोच को और गहराती हैं। सुशील की समझ से कलाकार कला या कविता का पाठ तैयार करता है। वह बस नर्तक और दर्शकों के बीच का संवाद कराता है, इसे मौन का पाठ कह सकते हैं, इस सन्दर्भ में कला सहृदय पाठक (या दर्शक) के अंतःकरण में उतर जाती है।

1. राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा हैः महात्मा गांधी
2. मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ पर मेरे देश में हिंदी की इज्ज़त न हो, यह मैं सह नहीं सकताः आचार्य विनोबा भावे
3. जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य का गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकताः डॉ. राजेंद्र प्रसाद
4. हमारी नागरी लिपी दुनिया की सबसे वैज्ञानिक लिपी हैः राहुल सांत्यायन
5. हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत हैः सुमित्रानंदन पंत
6. सभी भारतीय भाषाओं के लिए यदि कोई एक लिपी आवश्यक है तो वो देवनागरी ही हो सकती हैः जस्टिस कृष्णस्वामी अय्यर
7. हिंदी का प्रचार और विकास कोई रोक नहीं सकताः पंडित गोविंद बल्लभ पंत
8. हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा हैः कमलापति त्रिपाठी
9. राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक हैः महात्मा गांधी
10. 'हिंदी का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है': महात्मा गांधी
11. 'यद्यपि मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिंदी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है': लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक
12. हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा तो है ही, यही जनतंत्रात्मक भारत में राजभाषा भी होगीः सी. राजगोपालाचारी
13. प्रान्तीय ईष्या–द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता इस हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकतीः सुभाषचंद्र बोस
14. हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा हैः विलियम केरी
15. हिंदी आम बोलचाल की 'महाभाषा' हैः जॉर्ज ग्रियर्सन

पुलिस स्टेशन का एक दिन का रोज़नामचा

मुशर्रफ़ हुसैन*

बोलो बेटा! सर मेरा पर्स छीनकर एक बदमाश भाग गया। पर्स में क्या था? सर 500 रूपए थे, चलो एक प्रार्थना पत्र लिखो और झपटमार का पूरा हुलिया तथा तस्वीर भी बना देना और अपना मोबाइल नं. भी लिख देना। ठीक है सर। जब पर्स हमें मिल जाएगा हम आपको फोन कर देंगे आप पुलिस स्टेशन मत आना, हम अपना काम करते रहेंगे। धन्यवाद सर।

थोड़ी देर बाद एक बूढ़ा रोता हुआ पुलिस स्टेशन में प्रवेश करता है। हुज़ूर मेरी बकरी को चुराकर चोर ले गया। बैठो बकरी का फोटो है। नहीं! बकरी कहाँ से चोरी हुई? घर के बाहर सड़क पर एक पेड़ से बांधी थी। तो फिर चोरी होनी ही थी। चोर का हुलिया बता सकते हो। नहीं सर। तो अपने घर का पता लिख दो, बकरी मिल जाएगी। बड़े मियाँ घर जाकर आराम करो जब बकरी मिल जाएगी हम आपके घर खबर कर देंगे।

आइये मैड़म क्या बात है? तुम्हें क्या परेशानी है? सर, मैं प्रेम नगर में रहती हूँ एक लफंगा मुझे देखकर सीटी बजाता है और अब तो उसने गाना भी गाना शुरू कर दिया है। कौन सा गाना? ''यह दिल तुम बिन कहीं लगता नहीं हम क्या करें? लुटे दिल में पिया बसता नहीं हम क्या करें?'' मैडम आप लफंगे का पता तस्वीर बना कर दे दो हम शीघ्र कार्रवाई करेंगे। आप बुरा न मानें तो एक प्रार्थना है आप घर बदल कर और किसी क्षेत्र में चली जाए। यह अति उत्तम होगा।

अनिल बेटा, तुम पुलिस स्टेशन, खेरियत तो है? नहीं अंकल एक बदमाश मेरा 35 हज़ार रुपए का मोबाइल छीन कर भाग गया और मैंने उसका पीछा भी किया वो भीड़ में गुम हो गया। बेटा, मोबाइल तो मिलना अब बहुत कठिन है। कल रविवार है चोर बाज़ार में घूमें। शायद वहाँ मिल जाए। बेटा बदमाश का हुलिया तथा अपने घर का पूरा पता लिखा जब हमें कोई सूचना मिलेगी मैं आपको घर के पते पर सूचित कर देंगे।

फोन की घंटी बजी, जी सर मैं धनलाल एम.एल.ए. बोल रहा हूँ, मेरा जर्मन नस्ल का कुत्ता गुम हो गया। लगता है कोई चोर चोरी कर के ले गया है 'सर मैं आपके घर पर आ रहा हूँ और उसकी फोटो को लेकर सारे पुलिस स्टेशनों पर वायरलेस कर देता हूँ और कुत्ता शाम होने से पहले आपकी हवेली पर होगा और काफी दिनों से आपके दर्शन भी नहीं किए हैं इसलिए मैं जल्दी आपकी सेवा में उपस्थित होता हूँ।

आइए, सर मैं हाईकोर्ट का वकील हूँ। मेरी मोटरगाड़ी कोर्ट परिसर से गायब हो गई है। सर, आप गर्म लेंगे या ठंडा। अब दोनों ही लूँगा, पहले चाय लाओ फिर नन्दूलाल की लस्सी पीऊँगा। सर, नई मोटर साइकिल ले लीजिए वो तो बाबा आदम के ज़माने की गाड़ी है। उसके पुर्जे भी अब नहीं मिलते हैं। उस्ताद फकीरा को फोन लगा। शाम 9 बजे तक मोटर साईकिल आपके दरवाज़े पर होगी। शाम को उस्ताद फकीरा थाने हाज़िरी देने आता है उससे इस बारे में बात करेंगे।

यह वकील एक पैसा अपना खर्च नहीं करता है सारा काम हमसे करवाता है एक गिलास पानी भी मोल का नहीं पीता है, अपना पेट कैसे भरता है सारा फ्री का माल हजम कर लेता है इसका हाजमा बहुत बढ़िया है। अन्दर से एस.एच.ओ. साहब ने आवाज़ लगाई, ''रामलाल रोज़नामचा लेकर अंदर आओ''। अच्छा सर, अभी लाता हूँ सर।

---

*एलडीसी, स्कूल अनुभाग, जामिइ

भारतीय संविधान की आठवीं सूची में शामिल भाषाएं

1. असमिया	5. कश्मीरी	9. तमिल	13. बांग्ला	17. मलयालम	21. सिंधी
2. उड़िया	6. कोंकणी	10. तेलुगू	14. बोड़ो	18. मैथिली	22. हिंदी
3. उर्दू	7. गुजराती	11. नेपाली	15. मणिपुरी	19. संथाली	
4. कन्नड़	8. डोगरी	12. पंजाबी	16. मराठी	20. संस्कृत	

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के बारे में

स्थापना

जामिया मिल्लिया इस्लामिया एक केन्द्रीय विश्वविद्यालय है जोकि मूल रूप से संयुक्त प्रांत अलीगढ़ में 1920 में स्थापित किया गया, बाद में 1925 में करोल बाग, दिल्ली में और उसके बाद जामिया नगर में स्थानांतरित हुआ। 1988 में यह संसदीय अधिनियमानुसार केन्द्रीय विश्वविद्यालय बना, उसके बाद से नए आयामों को प्राप्त करते हुए विभिन्न दिशाओं में विस्तार कर रहा है।

यह विश्वविद्यालय इसके संस्थापकों, जैसे शेखुल हिन्द मौलाना महमूद हसन, मौलाना मौहम्मद अली जौहर, हकीम अजमल खान, डॉ. मुख़्तार अहमद अंसारी, जनाब अब्दुल मजीद ख़्वाजा और डॉ. ज़ाकिर हुसैन के अथक प्रयासों का परिणाम है। यह आम तौर पर सभी लोगों में तथा विशेष रूप से मुसलमानों में शिक्षा के माध्यम से सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन लाने के महान लक्ष्य–प्राप्ति की दृढ़ प्रतिबद्धता का प्रतीक है। जामिया मिल्लिया इस्लामिया की विशिष्ट पहचान की वास्तविक व्याख्या डॉ. ज़ाकिर हुसैन साहिब द्वारा की गई है।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया मूल रूप से औपनिवेशिक शासन के खिलाफ शिक्षा एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिए संघर्ष तथा आंदोलन के रूप में अस्तित्व में आया और आम भारतीय के लिए एक राष्ट्रीय संस्कृति विकसित की। इसकी स्थापना भारतीयों में राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रीय सद्भावना के विकास के लिए हुई, जोकि भविष्य में भारत की प्रगति में साझेदारी से गर्व महसूस करें, जोकि शांति एवं विकास के लिए राष्ट्रों के शिष्टाचार की भूमिका निभाएगा तथा जन सामान्य और विशेष रूप से मुसलमानों के बच्चों को भविष्य में उनकी रूचि के विभिन्न विषयों/पाठ्यक्रमों में मास्टर बनने के लिए तैयार करेगा।

इस महान संस्था के संस्थापकों का मिशन केवल सभी हितधारकों के लिए एक प्रकाश स्तम्भ स्थापित करना ही नहीं था, बल्कि इस विश्वविद्यालय को विश्व में शिक्षा के प्रमुख संस्थान के रूप में स्थापित करने के लिए प्रेरित करना भी था। इसे अधिगम के अत्याधुनिक अनुभव, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानक शिक्षा, बौद्धिक स्वतंत्रता और समकालीन चिंतन के क्षेत्रों में महत्वपूर्ण शोध के अवसर प्रदान करने में विशिष्टता प्राप्त करनी चाहिए।

अब, जामिया मिल्लिया इस्लामिया दिसम्बर 2021 में सेकंड राउंड में नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्रत्यायित केन्द्रीय विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय एक बहुस्तरीय शैक्षणिक प्रणाली का समूह है जिसमें स्कूली शिक्षा, स्नातक और स्नातकोत्तर शिक्षा के सभी पहलू शामिल हैं।

विश्वविद्यालय यह मानता है कि शिक्षण और अनुसन्धान पूरक गतिविधियाँ हैं जो इसके दीर्घकालिक हित को आगे बढ़ा सकती हैं। इसमें प्रातिक विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, इंजीनियरिंग एवं प्रौद्योगिकी, शिक्षा, मानविकी एवं भाषा, वास्तुकला एवं एकिस्टिक्स, ललित कला, विधि और दंत चिकित्सा एवं नव स्थापित प्रबंधन संकाय शामिल हैं। इसके अलावा, इसका एक प्रसिद्ध एजेके–जनसंचार अनुसंधान केंद्र भी है। जामिया में तीस से अधिक अनुसंधान केंद्र हैं जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण शोध के संदर्भ में उपलब्धि हासिल की है। इनमें से कुछ केंद्र हैं: पीस एवं कनफ्लिक्ट रिज़ोल्यूशन केंद्र, अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन अकादमी, संस्कृति मीडिया एवं प्रशासन केंद्र, नैनोविज्ञान एवं नैनोप्रौद्योगिकी केंद्र, एफटीके–सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र, प्रबंधन अध्ययन केंद्र, डॉ के. आर. नारायणन दलित एवं अल्पसंख्यक अध्ययन केंद्र, पश्चिम एशियाई अध्ययन केंद्र, फिजियोथेरेपी एवं पुनर्वास विज्ञान केंद्र, सैद्धांतिक भौतिकी केंद्र, मूलविज्ञान में अंत:विषयक अनुसंधान केंद्र तथा उन्नत बहुविषयक अनुसन्धान एवं अध्ययन केंद्र शामिल हैं।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया स्नातक, स्नातकोत्तर, एम. फिल तथा पीएच.डी. के साथ–साथ डिप्लोमा एवं प्रमाण–पत्र कार्यक्रम के लिए भी प्रवेश परीक्षा आयोजित करता है। जामिया मिल्लिया इस्लामिया सभी समुदायों के छात्रों के हितों का ध्यान रखता है, तथापि मुस्लिम समाज के वंचित वर्गों की विशेष आवश्यकताओं को पूरा करना उसका लक्ष्य है। अपने संस्थापकों की विरासत को सहेजने के लिए यह सकारात्मक कार्रवाई के उपायों का समर्थन करता है और एकीत शिक्षा की धर्मनिरपेक्ष और आधुनिक

प्रणाली के निर्माण लक्ष्यों को बढ़ावा देता है। इस प्रकार, जामिया लगातार 21वीं शताब्दी में राष्ट्र के सामने आने वाली नई और उभरती हुई चुनौतियों का सामना करने के लिए इतिहास से लगातार सीख ले रहा है।

विज़न

एक ऐसे मानव ब्रह्मांड की रचना करना जिसमें सभी के लिए एकता, समानता, साहचर्य, न्याय और शांति हो।

अभियान

- सक्षम, कुशल और संवेदनशील मानव संसाधन विकसित करना जो गुणवत्ता शिक्षण और अनुसंधान के माध्यम से राष्ट्र की सेवा करने के लिए शारीरिक और मानव पर्यावरण के संवर्धन को उत्प्रेरित करे।
- विचारों के स्वतंत्र आदान–प्रदान के माध्यम से एक सहयोगी अनुसंधान वातावरण निर्मित करते हुए एक विश्व स्तरीय शिक्षण–सह–अनुसंधान विश्वविद्यालय बनना।
- समाज के सतत विकास के लिए प्रयास करना और इष्टतम क्षमता निर्माण सुनिश्चित करना।
- संस्थागत उद्देश्य को मूर्त रूप देने के लिए विविध रचनात्मक विचारों को आकर्षित करना और आगे बढ़ाना।

उद्देश्य

विश्वविद्यालय के उद्देश्यों में, अधिगम की शाखाओं– शिक्षण, अनुसंधान और विस्तार सुविधाओं के माध्यम से ज्ञान का प्रसार करना तथा विश्वविद्यालय एवं शिक्षकों की प्रगति के लिए आवश्यक वातावरण एवं सुविधाएँ प्रदान करना शामिल है:–

पाठ्यक्रमों के पुनर्गठन, शिक्षा में नवाचार, शिक्षण और अधिगम के नए तरीकों और व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकासय

- विभिन्न विषयों का अध्ययनय
- अंतःअनुशासनिक अध्ययन
- राष्ट्रीय सदभावना, धर्मनिरपेक्षता और अंतर्राष्ट्रीय समझ

गुणवत्ता वचन

विश्वविद्यालय गुणवत्ता शिक्षण, अनुसंधान, आउटरीच तथा परामर्श सेवाएं देने के लिए प्रतिबद्ध है जिससे सभी हितधारकों की अपेक्षाओं को पूरा किया जा सके। विश्वविद्यालय मानक और उपयुक्त सांविधिक और विनियामक आवश्यकताओं का अनुपालन करता है। विश्वविद्यालय समुचित स्तर पर नियमित समीक्षा के माध्यम से गुणवत्ता प्रणाली की प्रभावशीलता में लगातार सुधार करता है।

प्रतीक चिन्ह (लोगो) का महत्व

प्रतीक चिन्ह में सबसे ऊपर 'अल्लाह ओ अकबर' के साथ एक सितारा रोशन है। अंधेरी रात में जब भटके हुए मुसाफिर जंगल को पार करना चाहते है और उन्हें कोई रास्ता नजर नहीं आता तब वह सितारों की मदद से अपना रास्ता तय करते हैं। 'अल्लाह ओ अकबर' का सितारा जामिया का निर्देशक सितारा है। इस की नजरें उस सितारे पर टिकी रहती हैं जो कि इस अँधेरी दुनिया में रास्ता दिखाता है। यह इस सच्चाई को दर्शाता है कि अल्लाह महान है और जो उसके आगे अपना सिर झुकाता है वह सच की खोज कर लेता है, जो उसके आगे झुकता है वह किसी और के आगे कैसे झुक सकता है? इस चमकते सितारे के नीचे एक किताब है जिस पर इबारत 'अल्लामल इन्साना मालम यलम' (इंसान को उसकी तालीम दें जो वह नहीं जानता।) यह पवित्र कुरान की एक आयत है पवित्र कुरान के माध्यम से, अल्लाह जाति, वर्ग, रंग, मालिक और गुलाम, के मतभेद का खुलासा करता है और अपने सच्चे मतों को स्पष्ट करता है। यह ग्रन्थ अँधेरे से रोशनी की तरफ ले जाता है, और स्वेच्छाचारियों एवं भटके हुए को सीधे मार्ग पर लाता है। मौहम्मद साहब ने अपने जीवन को एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने आँखों की रोशनी और दिल के जोश से, कुछ अच्छे लोगो का एक समूह तैयार किया जो संसार से बुराई को मिटा कर खुदा के सन्देश को फैला सके। किताब के दोनों तरफ दो खजूर के पेड़ हैं, ये उस विशिष्ट भूमि पर हैं जहाँ खुदा के आख़िरी नबी पैदा हुए थे। यह उस बंजर घाटी का प्रतीकात्मक रूप है जहाँ कुछ भी पैदा नहीं होता था, लेकिन यहीं पर दीन के पौधे की जड़े जमी। ये पेड़ उस धरती पर उम्मीद के प्रतीक हैं जहाँ कोई पौधा या फूल भी नहीं उग पाता था, वहाँ

अचानक हिदाया (मार्गदर्शन) की बसंत की फुहार फूट पड़ी और दिल वालों का एक समुदाय उससे सराबोर हो गया। वे लोग जो प्रतिकूल परिस्थितियों में निराश हो चुके थे उनके लिए यह सांत्वना का एक स्रोत था। बाह्य कारक उन्हें निराश कैसे कर सकते हैं?

नीचे एक छोटा अर्धचंद्र है जिसमें 'जामिया मिल्लिया इस्लामिया' अरबी में लिखा है। यह क्रिसेंट छोटा है, लेकिन जैसे ही चौदहवीं रात को पूर्णिमा का विस्तार होता है, वैसे ही जामिया का भी होता गया। इसका अर्थ यह है कि यह हमारे काम की शुरुआत है। यह पूर्ण चंद्र के रूप में विकसित होगा और उसके देखने वाले की खुशी का एक स्रोत बनेगा।

पैनोरेमिक प्रोफाइल

जामिया मिल्लिया इस्लामिया का देश के शैक्षिक परिदृश्य में एक ऐतिहासिक और विशिष्ट स्थान है। यह संस्थान अभिनव शिक्षण और पेशेवर प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देता है। पिछले कुछ वर्षों में, जामिया अधिगम के क्षेत्र के रूप में उभरा है जो देश की समावेशी भावना पर बल देते हुए भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक विविधता को रेखांकित करता है। इसने सीखने की ऐसी भावना पैदा की है जोकि आधुनिकता के साथ परंपरावाद और मानवतावाद के साथ व्यावसायिकता को साथ–साथ रखते हुए राष्ट्र निर्माण की परंपरा से जोड़ती है। जामिया की शक्ति अतीत से निकलकर वर्तमान को संबोधित करने और भविष्य के निर्माण करने की क्षमता में निहित है। शिक्षक और शोधकर्ताओं ने जामिया मिल्लिया इस्लामिया के सभी संकाय, विभागों और केंद्रों में ज्ञान का विस्तार करने में योगदान दिया है। जामिया की शिक्षा, गुणवत्ता एवं अनुसंधान को बनाए रखने के लिए ''उत्कृष्ट एवं अविश्वसनीय वचनबद्धता'' है।

यह अपनी शोध उत्पादकता, प्रभाव, नवाचार और उत्ष्टता के प्रकाशनों के आधार पर वैज्ञानिक परिणामों को सुदृढ़ करने का प्रयास कर रहा है।

यह उच्चतर शिक्षा में जामिया के योगदान का ही संकेत है कि जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कई प्रोफेसर पूर्व में और कई वर्तमान में भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति, एनआईटी के निदेशक हैं।

फिर से...

मुमताज़ अली*

इज़हारे मुहब्बत करके हम मायूस हो गए
चाँद थे कभी आसमां के आज फ़ानूस हो गए।
चहकते थे गुलशन में जो हर कली से वाक़िफ थे
आज वो खुद ही खुद से बेतारूफ़ हो गए।।

कुछ देर पहले वाक़िफ थे हम मुकम्मल तौर से
चंद लम्हों की गुफ्तगू से हम नावाक़िफ हो गए।
दिल्लगी है हमसे या संजीदा है अपने दिल से
इसी ख्याल में हर शब ओ रोज़ कयामत के मुवाफ़िक हो गए।।

आफ़ताब की रहबरी में दिन का अगाज़ हुआ,
शाम की चांदनी के साथ ही अपने ख्वाबों में खो गये।
रहज़नी का वही किस्सा पुराना फिर रूबरू होने वाला है,
इन्हीं वुजुहातों से मुमताज़ अव्वल में ही दिल से मुखातिब हो गए।।

बेनियाज़ी अ़ख़्तियार कर ली हमने तुमसे रहबर
वो क्या अता करेंगे जो खुद ही सवाली हो गए।
अदायगी करना बड़ा मुश्किल है दिल से दिल की,
उनसे मुहब्बत का बर्ताव मिलेगा आज फिर से बेउम्मीद हो गए।

*सहायक, शिक्षा संकाय, जामिइ

सैलरी एकाउंट (मध्यवर्गीय)

नितेश दोगने*

शब्दों के रूपांतरण में, जो आधा है,
किंतु कार्य में पूर्ण है,
परिवार की इकाई है,
वो मध्यवर्गीय।
खुशी एवं बंधाई एक साथ
द्वार आई,
एक नया सैलरी एकाउंट जो खुला है,
पूरी कॉलोनी के साथ आसपास
की हवा में, आज गुड़ और खोपरा जो मिला था,
आधे शब्दों को पूरा करने एक,
नया सैलरी एकाउंट जो खुला है।

*सहायक प्राध्यापक, वास्तुकला विभाग,
वास्तुकला एवं एकिस्टिक्स संकाय, जामिइ

डलहौजी की साहित्यिक यात्रा

डॉ. मुकेश कुमार मिरोठा*

दिल्ली स्थित अपने विश्वविद्यालय जामिया मिल्लिया इस्लामिया में रोज की भाँति कक्षा के पश्चात उस दिन भी लंच कर रहा था। सहसा फोन की घंटी बजी, देखा तो आगरा से डॉ. सूरज बड़त्या का नम्बर फ्लैश हो रहा था। सूरज जी दयालबाग विवि. आगरा से कई वर्षों से पढ़ा रहे है। 'युद्धरत आम आदमी' पत्रिका का सफलतापूर्वक उन्होंने सम्पादन भी किया है। अम्बेडकरवादी लेखक संघ के संरक्षक होने के साथ–साथ आन्दोलन कर्मी और कहानीकार भी है। फोन उठाने पर हैलो के बाद विनम्रतापूर्वक आदेश देते हुए बोले – डलहौजी चलोगे? डलहौजी नाम सुनते ही मुझे लार्ड डलहौजी याद आए। खैर साहित्यिक अभिरुचि और डॉ. सूरज के रूप में सहयात्री होने की वजह से मैंने तुरंत हामी भर दी। उस दिन मेरा मन अधिक उत्साह से भरा रहा, जिसकी वजह से कक्षा में भी मेरा मन रमा रहा। उस दिन द्वारका स्थित अपनी घर की वापसी में डलहौजी की खूबसूरती और रामसरूप जी की कथा–यात्रा ही घूमती रही।

10 सितंबर 2018 को मुझे एक मेल आया जिसमें गोष्ठी में शामिल होने का आमंत्रण था। डॉ. क्रान्ति पाल और केसरा राम जी द्वारा भेजा गया आमंत्रण पत्र पढ़ते समय खुद को गौरवान्वित सा महसूस किया और 14 सितंबर 2018 की रात 11:15 पर सराय रोहिल्ला से चलने वाली धौलाधार एक्सप्रेस ट्रेन में आरक्षण करवा लिया। अलबत्ता सारी तैयारियां पूरी कर ली गई। मेरे एक खास द्वारा दी गई 'मठरियों' और 'नमकीन' को ससम्मान रखा गया। हम सब में यह तय हुआ था कि हम रात 9 बजे इन्द्रलोक मेट्रो स्टेशन पर मिलेंगे। वहीं पर खाना होगा और 11 बजे रात को सराय रोहिल्ला स्टेशन से ट्रेन पकड़ ली जाएगी। मेट्रो की भागमभाग के बावजूद मैं रात 8:55 तक वहाँ पहुँच गया। सुखद आश्चर्य कि मुझसे पहले डॉ. सूरज और हरेप्रकाश उपाध्याय वहां पहुँच चुके थे। नियत समय से 30 मिनट की देरी के साथ भारतीय परम्परा का मान रखते हुए ट्रेन प्रारम्भ हुई। अपनी–अपनी सीट पर आकर हमने चैन की सांस ली और साहित्य की पहाड़ी कथा यात्रा की ओर रवाना हो गए।

'चाय, चाय की तेज आवाज़ों में मुझे सुबह जगने पर मजबूर कर दिया। देखा तो डॉ. सूरज जगे हुए थे। उन्होंने बताया कि अब 30 मिनट बाद पठानकोट स्टेशन आने वाला है। वहीं हम सबको उतरना है। मैंने अपने दोनों साथियों को जगाया। फ्रेश हुए, चाय पी और ट्रेन की खिड़की से दिख रहे पंजाब की लहलहाती धरा के सौन्दर्य में लीन हो गए। चारों तरफ हरियाली थी। दूर पहाड़ भी दिख रहे थे। अभी खूबसूरती का दिग्दर्शन पूरा भी नहीं हुआ था कि ट्रेन हमारे गन्तव्य स्टेशन पर आकर रुक गई। हम सब उतरे। सुबह की ताज़गी बढ़ गई थी। पठानकोट स्टेशन पर चाय पीने के बाद पृद्त टैक्सी द्वारा हम चारों ने डलहौजी तक की यात्रा प्रारम्भ कर दी। घड़ी की सुइयाँ उस वक्त 10:00 बजे का इशारा कर रही थी।

पठानकोट के खूबसूरत स्टेशन से निकलकर रंग–बिरंगे शहर से होती हुई टैक्सी अब धीरे–धीरे पहाड़ों की ओर बढ़ रही थी। हमारे ड्राइवर का नाम 'उपेंद्र' था। बड़ा हँसमुख व्यक्ति था। प्रति की खूबसूरती को निहारते–निहारते कब 'होटल मेहर' आ गया, पता ही नहीं चला। वहाँ केसराराम जी ने हमारी आगवानी की। उनसे मिलकर लगा कि क्यों साहित्य हमें श्रेष्ठ मनुष्य बनाता है। विचार और ज्ञान संपदा के धनी केसराराम जी व्यवहार में भी अपनत्व की भावना से भरे हुए इंसान है। उन्होंने हमें अपने आरक्षित कमरों तक पहुँचाया। हमने उपेंद्र बाबू को फिर मिलने के वादे के साथ विदा किया और नहाने के बाद थोड़ा आराम किया। अब हम सब ठंडक को महसूस करने लगे थे। पानी और हवा दोनों ही शीत का एहसास करा रहे थे। अलबत्ता नहाने के बाद गर्मागर्म चाय पीकर हमने खुद को तरोताजा महसूस करवाया। इतने में बुलावा आ गया कि गोष्ठी का उद्घाटन सत्र प्रारंभ होने वाला है। हम सबने गोष्ठी–कक्ष की ओर प्रस्थान करना मुनासिब समझा। समय था अपराहन 4:00 बजे का, तारीख थी 15 सितंबर, 2018, अद्भुत। पहला भाव मन में आया था जब मैंने होटल मेहर के उस गोष्ठी कक्ष को देखा। आमतौर पर होने वाली गोष्ठियों से परे वहाँ न कोई अध्यक्ष था, न सत्र–संयोजक और न ही विषय–प्रवर्तक।

*एसोसिएट प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, जामिइ

सेमिनारों में मंच हेतु होने वाला ताम–झाम भी वहाँ नहीं था। एक बड़ा सा हॉल, करीने से लगाए गए गद्दे और तकिए, पानी की व्यवस्था और एक दीवार पर सम्मानीय रामस्वरूप जी की आकर्षक तस्वीर जिसके समक्ष एक मोमबत्ती का निर्बाध प्रज्वलित रहना बस इतना ही था। देश भर के गिने चुने कुल 25 लोग वहाँ थे, जिनमें से ज्यादातर अपने विषय के विद्वान् वक्ता और कहानीकार थे। माइक की व्यवस्था नहीं थी। प्रकाश व्यवस्था भरपूर थी। गद्दों पर हम सब बैठ गए। किसी के लिए कोई निश्चित स्थान तय नहीं था। मैंने भी दो गरिमापूर्ण व्यक्तियों के मध्य अपनी जगह ली। उनका परिचय देने की क्षमता मुझमें नहीं है किन्तु मैं बता दूँ कि उनमें एक राजस्थानी भाषा के साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त कहानीकार 'भरत ओला' थे और दूसरे कश्मीर के प्रसिद्ध आलोचक कम कहानीकार 'रतन तलाशी' जी थे। इनके मध्य मेरी हालत आलूओं के बीच फंसे टमाटर की तरह थी। इनका ओज और गुरु गम्भीर ज्ञान मुझ जैसे नाचीज़ के लिए दुरूह और दुर्लभ था। हम सब जब आपस में परिचय कर रहे थे, तभी एक तेजपूर्ण चेहरे के स्वामी ने कक्ष में प्रवेश किया। उनके चेहरे की चमक ने हम सबको एक पल के लिए चुप करा दिया।

केसराराम जी ने बावा जी को सम्बोधित करते हुए स्वागत वक्तव्य देने के लिए कहा। बावा जी ने अपनी गम्भीर वाणी में कम शब्दों के साथ अपनी और रामसरूप अणखी जी की सुखद स्मृतियों को याद किया। उन्होंने दिल्ली से सन 1960 में आने से वर्तमान तक के सफ़र पर संक्षिप्त रोशनी डाली। डलहौजी शहर की जानकारी 'विकिपीडिया' पर इतनी नहीं थी, जितनी बावा जी के पास थी। शिकार पर निकले नक्शानवीस द्वारा डलहौजी शहर की खोज, पाँच पहाड़ियों के पाँच गाँवों से मिलकर बना डलहौजी, पाकिस्तान के राष्ट्रपति की कोठी, पाकिस्तान के लोगों के घर का बसना और उजड़ना, रवीन्द्रनाथ टैगोर, गांधी जी, जवाहरलाल नेहरु और सुभाषचंद्र बोस आदि का डलहौजी से लगातार सम्पर्क और सम्बन्ध। भारत की सर्वाधिक घनी हरियाली वाला क्षेत्र, लाहौर के हिल स्टेशन के रूप में पहचान रखता डलहौजी, शीत ऋतु में सफेद बर्फ की चादर में लिपटा शहर, बाबा जी का चीते से सामना जैसी अनेक घटनाओं का रोचक, मनोरंजक लेकिन ज्ञानवर्धक जानकारी का विस्तृत इतिहास अपने में समेटे बाबा जी ने हम सबको बता कर लाभान्वित किया। उनकी स्मृति उनके पुष्ट शरीर की तरह जबरदस्त थी। जब उन्होंने बताया कि होटल मेहर में जहाँ यह गोष्ठी हो रही है, वही दो दिन तक क्रांतिकारी सुभाषचंद्र बोस रुके थे तो अनायास हम इतिहास और वर्तमान के मध्य नये बनते पुल की तरह हो गए। हमारे रोएं खड़े हो गए। अहा! आज़ाद हिन्द फ़ौज का नायक जिस धरा पर रुका था, हमारे समक्ष वही पुण्य समीरा धरा थी। गर्व की अनुभूति और अचरज की पराकाष्ठा ने मुझे मौन कर दिया था। मैं शून्य हो गया था। उस वक़्त मैं इतिहास का हिस्सा हो चुका था। दहशत, खूनी मंजर मेरे समक्ष था, जहाँ आज़ादी के लिए बोस 'दिल्ली चलो का नारा' बुलंद कर रहे थे। सभी क्रांतिकारियों को नमन।

डॉ. क्रान्ति पाल अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में मॉडर्न इन्डियन लैंग्वेज के अंतर्गत पंजाबी के प्रोफेसर हैं। रामसरूप अणखी स्मृति न्यास के वे आजीवन संरक्षक भी है। 'लोहे का गेट' कहानी अपनी संवेदना में अप्रतिम कहानी है। डॉ. क्रान्ति पाल की दमदार आवाज में प्रस्तुतिकरण ने कहानी को नई उड़ान दी। गोष्ठी का आगाज़ हो चुका था। कथा–संवेदना चारों तरफ सुवासित थी। हम सब कथा यात्रा की इस साहित्य–धारा में अवगाहन को तैयार थे। अणखी जी को याद करते हुए डॉ. क्रान्ति पाल ने सभा में परस्पर परिचय आदान–प्रदान की रिवायत निभाने की बात कही। हम सब ने एक दूसरे को अपना कार्यक्षेत्र, व्यवहार और साहित्यिक उपलब्धियों द्वारा परिचय दिया। मेरे अलावा वहाँ सब साहित्य के पुरोधा थे, महारथी थे। पंजाबी, हिंदी, डोगरी, कश्मीरी और राजस्थानी भाषा–बोली के सुप्रसिद्ध कथाकार और आलोचकों से भरा वह कक्ष ज्ञान भंडार था। साहित्य के ये अध्येता वहाँ रत्न थे। मणिकांचन संयोग की भांति ये एक तरफ कथाकार थे तो दूसरी तरफ अपने समय के सरोकारों से गहरा राबता रखने वाले बुद्धिजीवी भी थे। उन सबके सहज व्यवहार ने मुझे बहुत प्रभावित किया। कई–कई पुस्तकों के लेखक होने के बावजूद उनमें सहृदयता, सहजता और निस्वार्थ भाव विद्यमान था। गर्व की अनुभूति अगर कहीं थी भी तो बस मेरे मन में। दुर्लभ सुख प्राप्ति आकांक्षारत।

आदरणीय केसराराम जी ने सभा को बताया कि अब मनमोहन बावा जी की 'विदिशा की बसंती' कहानी का पाठ होगा। मूल कहानी पंजाबी में है, अतः गोष्ठी की शर्तों के मुताबिक उसका अनुवाद हिंदी में किया गया। प्रभावी आवाज और व्यक्तित्त्व के स्वामी राजकुमार मेहरा जी ने कहानी की भाव–प्रस्तुति दी। सबने तल्लीनता से कहानी

सुनी और सराही। प्रस्तुत कहानी पर सबने अपनी राय दी। गोष्ठी का मूल मन्तव्य भी यही था। सभी लेखक श्रोताओं ने कहानी की विशेषताओं पर व्यापक चर्चा की। चर्चा विचारोत्तेजक थी। मैंने अपना पक्ष रखते हुए कहानी को जटिल मानसिक द्वंद्वकी कहानी बताया। अतीत की स्मृतियों की दर्दनाक परिणति और वर्तमान की संवेदना को एक साथ उदघाटित करती यह एक मार्मिक कहानी है। कहानी प्रेम के मांसल स्वरूप की नई सिरे से व्याख्या करती है। शीर्षक नए भाव बोध प्रकट करता है। कहानी में पंजाबी भाषा सूक्ष्म भावों के आवर्तन में शीर्ष भूमिका का निर्वाह करती है। मेरी टिप्पणी को आदरणीय मनमोहन बावा और डॉ. क्रान्ति पाल की प्रशंसनीय निगाहों ने जीवंत बना दिया। उसमें इनकी सहमति के स्वर ने मुझमें हौसले का संचार किया। अब शनैः शनैः वैचारिकता का असर सब पर होने लगा। व्यवहार वाला पक्ष अब सिद्धांत की ओर अग्रसर था। माहौल में रंग जमने लगा था। कक्ष के बाहर शीतल दंतवीणोपदेशी हवा पूरे जोश में थी। पहाड़ी ठंड अपना रूप दिखाने लगी। ऐसे में गर्म चाय और पकौड़ों ने वातावरण में गर्मी का अहसास कराया। कथा और विचारों का निर्बाध–प्रवाह बदस्तूर जारी था। बाहर ठंड थी किन्तु कक्ष में कथा और आलोचना के प्रभावस्वरूप माहौल गर्म था।

हिमाचली चाय को ताजगी के समानांतर राजस्थानी कथाकार भरत ओला ने अपनी कहानी कलाकार बिसनाराम और 23 मार्च की कहानी का पाठ प्रारम्भ किया। इनकी आवाज का भी पुरकशिश अंदाज़ था। कहानी एक ऑटो चालक के दैनंदिन क्रियाकलापों के इर्द–गिर्द बुनी गयी थी। व्यष्टि से होती हुई कहानी समष्टिगत दुखों के समुच्चय में परिवर्तित हो जाती है। राजनीतिक आयामों का पर्दाफाश करती यह कहानी वर्तमान भ्रष्ट, पतित व्यवस्था को आईना दिखाने का कार्य करती है। कहानी में समकालीन प्रसंगों के विवरण के आधार पर 'रिपोर्ताज' के सारे गुण मौजूद थे। मैंने कहानी की रंगमंचीय आधार पर समीक्षा की। नाटक एवं नुक्कड़ नाटक के माध्यम से चेतना जागृति का समर्थन करते हुए मैंने कहानीकार की अभिव्यक्ति शैली की प्रशंसा की। गोष्ठी में कहानी के 'समाचारीत' रूप पर व्यापक बहस भी हुई। बहसोपरांत आदरणीय भरत ओला ने सबकी शंकाओं का समाधान किया। कुल मिला कर कहानी पर चर्चा का लम्बा दौर चला। तत्पश्चात सत्र की आखरी कहानी के तौर पर 'रतन तलाशी' जी ने 'समाज सेवा' शीर्षक से कहानी का पाठ किया। कहानी पठन का उनका कश्मीरियत भरा अंदाज़ सबको लुभा रहा था। कहानी कश्मीरी आम व्यक्ति, उसकी दिनचर्या और सेना के पारस्परिक सम्बन्धों की पड़ताल करती है। लेखक ने बताया कि वे स्वयं एक विस्थापित कश्मीरी लेखक है। विस्थापन से उपजा दर्द और तकलीफ उनकी कहानी में झलक रहा था। कहानी की मार्मिकता और अनूठे विषय ने सबको प्रभावित किया।

अगली सुबह हम सब जल्दी उठ गए। तैयार हुए और सुबह–सुबह की ताजी हवा को महसूस करते हुए डलहौजी में प्रातः भ्रमण को निकल गए। शहर हमारे लिए अनजान था, इसमें 'गूगल मैप' ने हमारी भरपूर सहायता की। बल खाती पहाड़ी पगडंडियों की स्वास्थ्यप्रद, प्रदूषणरहित जलवायु ने मन को अपार शान्ति दी। गरम सड़क रोड़ से होते हुए हम सुभाष चौक पर पहुँच चुके थे। रास्ते में वानर सेना हमारा इस्तकबाल कर रही थी। पहाड़ों पर की गई चित्रकारी मन मोह रही थी। उनमें हमारा ध्यान सबसे ज्यादा गौतम बुद्ध के चित्र और संदेशों पर गया। उनकी ओर देखने मात्र से अलौकिक ज्ञान और शांति का अनुभव हो रहा था। सुभाष चौक स्थित सेंट फ्रांसिस चर्च और सुभाष चन्द्र बोस की भव्य प्रतिमा आकर्षण का केंद्र है। सुबह के वक्त भी वहाँ भीड़ थी। लोग डलहौजी शहर की सुन्दरता को अपने 'मोबाइल' के कैमरे में कैद करने की असफल कोशिश कर रहे थे। वहीं पर हमने गर्मागर्म नाश्ता किया। मैगी और अंडे पसंदीदा भोजन है शायद पहाड़ों का। वहाँ से हम ठंडी सड़क रोड़ होते हुए वापस अपने होटल आ गए। रास्ते में 'बिच्छू बूटी' जड़ी के बारे में पहाड़ी युवक ने बताकर हमारा ज्ञानवर्धन किया। डलहौजी वैभवशाली, सर्वाधिक स्वच्छ और सुव्यवस्थित शहर लगा। इसका ब्रिटिश कालीन 'आधारभूत ढांचा' ही इसे जीवंत नहीं बनाता बल्कि चारों ओर हरी भरी पहाड़ियों से घिरी हिमाच्छादित घाटियाँ भी इसे काफी मोहकता प्रदान करती है। शहर की सुन्दरता का वर्णन शब्दों में नहीं चित्रित किया जा सकता। इसका अद्‌भुत सौन्दर्य प्रत्यक्ष देखकर ही दिल में उतारा जा सकता है। मेरा 'फोन ट्रैकर' 4 किलोमीटर पैदल चलने की बात कर रहा था। होटल आकर फ्रेश हुए और संगोष्ठी प्रारम्भ होने के तय वक्त पर गोष्ठी कक्ष में इच्छित जगह पर जाकर बैठ गए।

अगले दिन के प्रारम्भिक सत्र की पहली कहानी हिंदी–पंजाबी में समान रूप से लोकप्रिय, समात कथाकार

'अमरीक सिंह दीप' ने पढ़ी। कहानी का शीर्षक था 'नागबूटी'। कहानी 1984 दंगों की पृष्ठभूमि पर आधारित है। माँ और उसके परिवार के दास्तान के वातावरण सृजन में उक्त कहानी अप्रतिम ठहरती है। पंजाबी लोक एवं रंग इस कहानी की केन्द्रीयता है। भाषा की तरावट अन्तस को झंत करती चलती है। मैं तो कहानी सुनकर सिहर गया था। स्वयं अमरीक जी कहानी का पाठ करते वक्त भावुक हो गए। वाकई कहानी अपनी संवेदना से सबको प्रभावित कर रही थी। मुझे कहानी के 'प्लॉट' और लोक की सौंधी महक ने सर्वाधिक प्रभावित किया। कहानी के भाव और शिल्प पक्ष को लेकर व्यापक चर्चा हुई। इनके बाद युवा कथाकार 'डॉ. सूरज बड़त्या' ने अपनी चर्चित कहानी 'कबीरन' का गम्भीर एवं प्रभावी अंदाज में पाठ किया। उनके पाठ करने के अंदाज की सबने तारीफ की। असल में 'कबीरन' कहानी की मूल आत्मा एवं उसकी गंभीर प्रस्तुति ने गोष्ठी को नए आयाम दिए। हाशिए पर खड़े समाज की जातिवादी मानसिकता को बताती यह कहानी अपने दौर की आन्दोलनधर्मिता से भी जुड़ती है। 'कबीरन' हाशिए पर पड़े समाज की प्रतिनिधि प्रतीक पात्र के तौर पर पहचान रखती है। वह सामाजिक नैतिकता, मान्यताओं, पाखंडों, परम्पराओं पर तीक्ष्ण एवं मार्मिक व्यंग्य करती है। इस तरह के विषय पर लिखी गई यह कहानी साहित्य की नई धारा को जन्म देती प्रतीत होती है। संवेदना का कठोर यथार्थ रूप कहानी की जान है। भाव के साथ–साथ कहानी का 'क्राफ्ट' भी जबरदस्त है। दोनों मिलकर कहानी में व्यक्त संवेदना की सच्चाई को सामने लाते है। वस्तुतः इस तरह की कहानियाँ हिंदी के कथा साहित्य को समृद्ध करती है। मनमोहन बावा जी ने भी कहानी की जमकर तारीफ की। साथी वक्ताओं ने भी क्रान्ति और प्रतिरोध के विद्रोही भावों को कहानी में कैद करने के एक हिस्से की अभिव्यक्ति के लिए डॉ. सूरज को हार्दिक बधाईयाँ दी। मैंने कहानी को समाज के अंदरूनी चेहरे को बेनकाब करने वाली कहानी बताई। साथ ही समाज में अंतिम छोर पर खड़े इंसान का साथ देने के लिए डॉ. सूरज को बधाई भी दी। बहस के साथ–साथ चाय पीकर शरीर में अब ताजगी महसूस हो रही थी। हम सब भी अब अगली कहानी, पर वैचारिकता के लिए तैयार थे।

अवैध विस्थापन और प्रवास की त्रासद स्थितियों को लेकर लिखी गई कहानी 'बाबू' के साथ पंजाबी कथाकार बलदीप सिंह साही पठन के क्रम में थे। लोक के समक्ष आती चुनौतियों और प्रेम के सूक्ष्म महीन जज्बातों का चित्रण करती कथावस्तु पंजाबी कहानी की समृद्ध कथा परम्परा का संकेत कर रही थी। बाबू–राज–राज मोहम्मद के त्रिआयामी आभासी बिम्ब प्रतीकरूपेण के बावजूद कहानी का एक सिरा वर्तमान से लगातार जुड़ा रहा। कहानी में स्मृति और वर्तमान (फ्लैशबैक पद्धति का विशिष्ट प्रयोग प्रशंसनीय है।) की भाव–श्रृंखला कही भी खंडित नहीं होती है। पंजाबी की उम्दा कहानी की हिंदी में प्रस्तुति ने मेरे हृदय में स्थान बना लिया। मैंने निश्चय किया कि वापस लौटकर पंजाब की कथायात्रा का अध्ययन अवश्य करूंगा। दुःख की बात भी है कि अधिकतर हिंदी भाषी कथाकार, आलोचक, लेखक इस तरह के साहित्यिक आयोजनों की बजाय बाजार केन्द्रित आयोजनों पर ज्यादा बल देते है। यहाँ पर तो भाषा का मुद्दा भी गौण था। इसकी बानगी डोगरी कहानी 'प्रतीक्षा' में देखने को मिली। डोगरी भाषा के सुप्रसिद्ध कथाकार शिवदेव मन्हास ने अपनी इस कहानी का भावपूर्ण वाचन किया। कहानी मिथक, फैंटेसी के चुनौतीपूर्ण शिल्प का प्रयोग करते हुए वर्तमान समय में प्रेम के स्वरूप को उद्घाटित करने में कामयाब है। यौन वर्जनाएं, कुंठा की उत्त्पत्ति , भावों का संवेग और उद्वेलन कहानी की अन्यतम विशेषताएँ है। टूटते दरकते सम्बन्धों के पीछे की कडवी हकीकत कहानी का प्राण तत्व है। कहानीकार अंत में पाठकों को विवेक आधारित निर्णय लेने की बात पर कहानी एकाएक समाप्त कर देता है। कहानी का इस तरह का अचरज भरा अंत आपको 'चेखव' की याद दिला जाता है। कहानी में प्रेम त्रिकोण की जटिलता का नया रूप भी देखने को मिलता है। कहानी वाचनोपरान्त हुई तथ्य आधारित बहस ने भूख बढ़ा दी थी। लंच का वक्त था। सुस्वादु भोजन ग्रहण करने के पश्चात का शेष समय हमने ऐतिहासिक 'सुभाष बावली' घूमने का प्लान किया और समूह में निकल गए। हरे–भरे पहाड़ों को नापते हुए हम बावली तक पहुँच गए थे। मीठे पानी की एक अजस्र धारा वहाँ प्रवाहमान थी। ठंडा पानी पीकर हमने थकावट दूर की। ज्ञात हो कि अपनी बीमारी के दौरान सुभाषचंद्र बोस यहीं रुके थे। वे शहर से रोजाना इस बावली तक पैदल भ्रमण किया करते थे। कहते है कि यहाँ की आबो–हवा ने उन्हें वक्त से पहले ही ठीक कर दिया था। हमने उन्हें सादर भाव से नमन किया और पुनः गोष्ठी में शामिल होने हेतु लौट आए।

गोष्ठी के अगले सत्र में पहली कहानी 'बखेडापुर' उपन्यास के लेखक और पत्रिका 'मन्तव्य' के सम्पादक हरेप्रकाश उपाध्याय ने पढ़ी। कहानी का शीर्षक था 'फतेहगंज का

साहित्य सम्मेलन'। यह एक व्यंग्य कहानी थी। विसंगतियों, विडम्बनाओं और कटु यथार्थ जगत में व्यंग्य आधारित कहानियों की कमी को उक्त कहानी भरती है। कथा–साहित्य के प्रचलित नाम कहानी में सूत्रों के तौर पर आये है। कहानी पूँजी केन्द्रित तन्त्र और सोशल मीडिया के पारस्परिक सम्बन्धों की पड़ताल करती है। आधुनिक साहित्यिक परिश्य और पूर्वनिर्धारित पुरस्कारों की प्रवृत्ति पर कहानीकार मार्मिक चोट करता है। 'गंज फतेही' के माध्यम से वे वर्तमान साहित्यकारों की राजनीति की पोल खोलते है। यह कहानी साहित्य–सेवा के भावना पतन की भी कहानी है, जहाँ अब केवल अवसरवाद शेष रह गया है। यही हमारे साहित्य के 'नोबल' वक्त की त्रासदी भी है। वर्तमान जीवन के तौर–तरीकों एवं युवाओं की पथभ्रष्टता पर भी कहानी संकेत करती है। आज के समय की वास्तविकता को आईना दिखाती उक्त कहानी की सबने भरपूर प्रशंसा की। ऐसे दौर में जहाँ बाजार हमे केवल उपभोक्ता मात्र समझता हो, इस तरह की कहानियाँ उस विचार को व्यवहार में परिवर्तित करके हमे नई राह भी दिखाती है। संस्कार, संस्कृति और सभ्यता का पंजाबी रूप समेटे हुए अगली कहानी पंजाबी कथाकार 'जितेन्द्र हांस' ने प्रस्तुत की। 'बूंद भर कहानी' की टैग लाइन 'ये जूती बड़ी कसूती' अपने वक्त के यथार्थ को पेश करने में महती भूमिका का निर्वाह करती है। ढाबे से शुरू हुई कहानी पंजाब के लोक में प्रविष्ट होकर उसके परिवेश को मनोरंजन के साथ–साथ वैचारिक गम्भीरता के साथ चित्रित करती है। पंजाबी महक अपनीं तासीर के साथ इस कहानी में समाहित है। पंजाब में बढ़ते लिंग भेद पर भी कहानी गम्भीर बात करती है।

इसके बाद 'आबरू' पत्रिका के यशस्वी सम्पादक और पंजाबी लेखक बलजीत सिंह रैना अपनी कहानी 'सैलाब' के साथ गोष्ठी की कथा वाचन के क्रम को आगे बढाते हैं। रैना जी फिल्मकार के तौर पर भी उत्ष्ट पहचान रखते है। उनकी कहानी 'सैलाब' में विशिष्टता के कुछ अंश वि।मान है। जम्मू– कश्मीर में 2014 की भयानक बाढ़ की पृष्ठभूमि में लिखी गई यह कहानी प्रेम भावनाओं के उद्दाम प्रवाह की भी कहानी है। सैलाब की त्रासदी के मध्य आंतरिक–बाह्य सैलाबों को सयंमित तरीके से प्रस्तुत करते हुए कहानीकार सम्वेदना जागृत कराने में कामयाब रहे है। भावनाओं के ज्वार को यथार्थवादी तरीके से प्रस्तुत किया गया है। सैलाब के माध्यम से कहानीकार प्रेम, प्रेम के स्वरूप, लव–जिहाद, साम्प्रदायिकता, सरकारी नीतियों, आत्म–सयंम, स्वानुभूति और प्रति आदि को अपनी वैचारिकता से सराबोर करते नजर आते है। कहानी की विशिष्टता उसकी 'पटकथात्मक प्रस्तुति' है। दिन के आखिरी सत्र की आखिरी कहानी के तौर पर डॉ. नामदेव ने अपनी पहली कहानी 'जंगल–पुराण' का मनोहारी वाचन किया। पहली कहानी होने के बावजूद कहानीकार ने कहानी में 'कहानी' को कहीं भी खोने नहीं दिया है। सामाजिक न्याय पर आधृत यह कहानी दलित समाज पर हो रहे षडयंत्रों का पर्दाफाश करती है। जन्म वर्सेस कर्म का पुरातन सिद्धांत कहानी में अम्बेडकरवादी चेतना के समानन्तर सच को सामने लाता है। कहानी दलित–स्त्री चेतना का उन्नयन करती है। कहानी नव–ब्राह्मणवाद और मनुवादी व्यवस्था पर अपनी चुटीली उक्तियों से प्रहार करती है। शोषण की लम्बी परम्परा को कहानीकार कथा–कौशल के साथ अभिव्यक्त करने में सफल रहा है। असमानता का जंगल, समानता केन्द्रित व्यवस्था के समक्ष ठहर नहीं पाता है। डॉ. नामदेव के तर्कों के आगे पारम्परिक जंगल–पुराण आधुनिक संविधान की श्रेष्ठता का पालन करने को मजबूर है। पारम्परिक शब्दावली के इस्तेमाल की जगह लेखक प्रतिरोध केन्द्रित नई भाषा का प्रयोग कर कहानियों में नए भावबोध और शिल्प का संकेत करते है। दर्द का इतिहास और शोषण का वर्तमान दर्शाती इस कहानी की सबने तारीफ की। गम्भीर चर्चा के उपरान्त भोजन के साथ दिन के सभी सत्रों का सफल समापन किया गया। मैं तो विचार और भोजन दोनों एक साथ ग्रहण करने की कोशिश में था। नहीं चाहता था कि दोनों में से कोई एक भी छूटे। पहाड़ी भोजन का स्वाद अंतस की भूख बढ़ा रहा था। केसराराम जी और डॉ. क्रान्ति पाल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ महत्वपूर्ण दिन का अंत हुआ। हम भी अपने–अपने बिस्तरों की ओर चल दिए।

अगले दिन हम सब एक बार फिर से तैयार थे। प्रातः भ्रमण के पश्चात् नाश्ते के बाद सभी वक्ता समापन सत्र के लिए एकत्र हुए। डॉ. क्रांति पाल ने सबको वैचारिक योगदान के लिया धन्यवाद दिया। केसराराम जी ने सक्रिय सहभागिता के लिए सबकी प्रशंसा की। इतने महान लेखकों के मध्य मैं स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर रहा था। सम्मानीय मनमोहन बावा ने आमंत्रित लेखकों–वक्ताओं को प्रमाणपत्र के साथ आशीर्वाद भी दिया। हमने भी अपने–अपने अनुभव सबके साथ साझा किए। एक समूह फोटो लिया गया। हम

सबने एक–दूसरे के कॉन्टैक्ट नम्बर लिए और भारी मन किन्तु चेहरे पर मुस्कान के साथ अलविदा किया। भविष्य में मिलने की उम्मीद के साथ सब अपनी–अपनी रह पर चल दिए। हिमाचल की धौलाधार पर्वत श्रृंखला हमें निहार रही थी। उसकी ऊँचाई और भव्यता हमें हमारी तुच्छता का एहसास करा रही थी। लेकिन सबसे बढ़कर उसकी सुन्दरता। वाणी से कछु कहा न जाए। लेखनी से अबु लिखा न जाए।

दोपहर के आस–पास हमने खज्जियार की राह पकड़ी। कालाटोप (8000 फिट की ऊँचाई) के वन्य जीव प्राकृतिक अभ्यारण्य में भ्रमण के बाद हम लगभग 2 बजे खज्जियार पहुँचे। भारत का स्विट्जरलैंड कहलाने वाला यह छोटा सा हिल स्टेशन अपनी सुन्दरता के लिए विश्व प्रसिद्ध है। विशाल पहाड़ों के मध्य फैला हुआ मैदान अपनी प्राकृतिक आभा और हरियाली दूब से चमत्कृत कर रहा था। वहाँ का सौन्दर्य हमें मोहित कर रहा था। एक 'पर्यटक–दोस्त' ने बताया कि सर्दियों में में बर्फ गिरने पर यहाँ का नजारा जन्नत सा एहसास देता है। जन्नत का तो पता नहीं लेकिन खज्जियार प्राकृतिक नजारों की दर्शन–गाह अवश्य है। शीतल वातावरण में हरी–नर्म घास पर लेटकर धूप सेंकते हुए हम प्रति में खो चुके थे। वहाँ की प्राकृतिक दृश्य छवि अद्भुत हैं। वापसी में हम डैनीकुंड (9500 फिट ऊँचाई) टॉप पर भी गये। यह जगह पूरे क्षेत्र की सर्वाधिक ऊँची जगह है। एक रोमांच और कुछ अलग करने का जूनून हम सबको वहाँ ले गया। लगभग दो किलोमीटर की पदयात्रा के बाद पहाड़ की चोटी से चारों तरफ देखने वाला दृश्य सिहरने को पर्याप्त था। बादलों के घेरे हमारे नीचे थे। सामने भारतीय सेना की एक छावनी भी स्थापित है। बादलों की लुका–छिपी देखते हुए हम डलहौजी की ओर लौट चले। हमारे ड्राईवर ने बताया कि रास्ते में पड़ने वाले डलहौजी पब्लिक स्कूल के मैदान में 'तारे जमीं पर' फिल्म की शूटिंग की गयी थी। तिब्बती मार्किट में खरीदारी के बाद हम होटल आ गये। दिन भर की थकान ने हमें जल्दी ही सोने पर मजबूर कर दिया। बेशक पैर थके हुए थे पर मन उमंग, उत्साह से लबरेज था।

सुबह की ताजी हवाओं के झोंके ने हमें उठा दिया। आज हमारा डलहौजी से पुनः दिल्ली लौटने का दिन था। हर सुबह की भांति इस सुबह भी हमने डलहौजी घूमने का संक्षिप्त प्लान बना लिया। हमने पंजपुला (होटल से लगभग 4 किलोमीटर दूर) तक की पैदल यात्रा का मन बनाया। पंजपुला भारत के क्रांतिकारी भगत सिंह से जुड़ी हुई याद के लिए भी मशहूर है। यहाँ का सतधारा झरना भी अपनी खूबसूरती के लिए प्रसिद्ध है। वापसी के दौरान हमने लोकल बस की यात्रा की। बस चुवाड़ी से डलहौजी के मध्य चलने वाली स्थानीय बस थी। हिमाचल की स्थानीयता के तमाम रंग बस में विद्यमान थे। गांधी चौक पर उतरने के साथ हमारा पठानकोट की ओर जाने का वक्त हो चुका था। बोरिया–बिस्तर बंधा हुआ था ही, अतः वो सब उठाया। गाडी में रखा। डलहौजी को आँखों और मन में समाते हुए भारी मन से आखिरी बार देखा और पठानकोट के लिए निकल पड़े। रास्ते में लैंड स्लाइड के बाद की स्थिति को देखकर हिमालय की विकरालता और भयावहता वाला पक्ष भी देखने को मिला। यह सब मनुष्य की आकांक्षाओं और प्रति के साथ खिलवाड़ की कहानियों को बयान करने के लिए पर्याप्त था। अगर अभी भी हमने प्रति के साथ छेड़छाड़ बंद नहीं की तो आने वाले वक्त में और भी त्रासद स्थितियों से रूबरू होना पड़ सकता है। प्रति ही अंतिम सत्य है। 'रणजीत सागर झील' के साथ–साथ चलते हुए हमने 'बिल्लू दा ढाबा' पर पंजाबी खाने का स्वाद चखा। पठानकोट स्टेशन पर तय वक्त पर हमारी ट्रेन 'जम्मू तवी–संबलपुर एक्सप्रेस' आ खड़ी हुई थी। हमने अपनी सीटें पकड़ी और बंद आँखों में खुले स्वप्नों के साथ दिल्ली की ओर प्रस्थान किया।

यह साहित्यिक यात्रा भले ही खत्म हो गयी हो किन्तु इसने बहुत कुछ सिखाया है। साहित्य की पारम्परिक गोष्ठियों के मुकाबले नए तरीके की विशुद्ध कथा–गोष्ठी की गरिमा से परिचित होने का अवसर मिला। नए साथी मिले। डलहौजी की प्राकृतिक रुपाभा और कहानीकारों की समकालीन वक्त को देखने की व्यापक समदर्शी दृष्टि को नजदीक से देखा। अगर आपके साथ डॉ. सूरज, डॉ. नामदेव और हरेप्रकाश उपाध्याय जैसे सहयात्री हो तो आप साहित्य और जीवन में बहुत कुछ अनायास ही सीख जाते है। आप गहन और गम्भीर चिन्तन के साथ स्वयं को समृद्ध बनाते है। दुनिया को देखने का एक नया नजरिया आपको मिलता है। साहित्यिक यात्राएँ आपको तरोताजा करती है। आपको यांत्रिकता, भौतिकता से परे जीवंत बनाती है। वैसे भी यात्राओं का साहित्यिक महत्त्व निर्विवाद है।

द मीडिया करी / एक मीडिया झोल

मजाज म. सिद्दीकी*

हर दूसरा न्यूज चैनल यह दावा कर रहा है कि वही सब–कुछ है और दूसरा कोई नहीं, सभी भारतीय न्यूज मीडिया चैनल एक गधा दौड़ हो गया है। जाहिर है, ऐसा लगता है कि भारतीय न्यूज मीडिया अपना उद्देश्य खो दिया है। मीडिया चैनल सब कुछ करता है, जैसे––– दहकाने–भड़काने वाले सवालों के जवाब देने से लेकर, स्क्रीन पर लगभग शाब्दिक रूप से आग लगाने से, अंधविश्वास को बढ़ावा देने और निर्णय पारित करने तक। आरोप प्रत्यारोप करना इनकी बड़ी बात है जो लगभग सभी न्यूज आवर बेकार के बहसों में हर न्यूज चैनल में दिखाई देता है। हमारे न्यूज स्टूडियो में न्यायिक न्यायालयों की तुलना में स्टूडियो में अधिक परीक्षण एवं जाँच होते हैं। असलियत में न्यूज चैनलों पर जैसे कि 'आप की अदालत' और 'द न्यूज अवर एट नाइन' जैसे शो पर चल रहे ट्रायल / जाँच। चाहे कुछ भी परिणाम हो न्यूज रूम योद्धाओं को लोगों को दोषी ठहराने या उन्हें क्लीनचिट देने से नहीं रुकता है। इन परीक्षणों की निरर्थकता में इजाफा करने वाले, चिल्लाते हुए अभियोजक हैं जो सोचते हैं कि केवल दूसरे पैनलिस्ट की आवाज पर काबू पाने से उनके मामले या मुद्दे की जीत हो सकती है।

अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि मीडिया लोगों को किसी भी बात का ध्यान अधिक नहीं रखती है। यह राजनेताओं का, राजनेताओं से, राजनेताओं के लिए, जनता की सोच, व्यवस्था को राजनेताओं के अनुसार आकार देने वाला माध्यम बन गया है। मेरे ख़्याल से न्यूज चैनल को केवल समाचार प्रस्तुत किया जाना चाहिए न कि राय या विचार, जो 'द न्यूज अवर एट नाइन' पर देखा जा सकता है। इस बात पर कोई बहस नहीं होती कि न्यूज ऐंकर को ही क्या सब पता है बल्कि उस मुद्दे पर भारत आखिर क्या चाहता है और क्या उस मुद्दे पर सभी सहमत हैं? पैनलिस्ट केवल झाड़ियों के आस–पास मँडराते रहते हैं और इस तरह आगे–पीछे मुद्दे से अलग–थलग अपनी राय बनाते और थोपते हैं। मीडिया असल में अपनी विचारधाराएं बेचना चाहता है, चाहे आप इसे चाहते हैं या नहीं वे आप क्या चाहते हैं वो कभी नहीं आप कि मन की बात करेंगें।

सूचना प्रसार चैनल से टीआरपी प्लेटफॉर्म / मंच की ओर झुकने तक की गिरावट बहुत तेजी से हुई है। भारतीय न्यूज मीडिया को फ्लैश बार जो न्यूज टीवी स्क्रीन पर एक महामारी के रूप में दिखती है और चीख–चीख कर कहती है कि मुझे देखो। सब कुछ अनिवार्य रूप से एक ब्रेकिंग न्यूज है। किसी नए देश में पी०एम० के जाने की बात, या सांप छल करने में सक्षम होने से लेकर ब्रेकिंग न्यूज सभी आतियों और आकारों में आती है। आप इसे जो भी नाम देते हों, उनके पास वो है। चलिये आगे बढ़ते हैं और देखते हैं समाचार चैनलों के लिए विभिन्न सास–बहू मेलो ड्रामा के कथानक सारांश के बारे में बात करना क्या जरूरी है, खासकर क्योंकि काल्पनिक सास अपनी बेटियों के खिलाफ साजिश रचती हैं, इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण है बनिस्बत किसी भी अन्य देश की तुलना में भारतीय क्षेत्र का अधिग्रहण करने की साजिश महत्वपूर्ण है।

सनसनीखेज बनाना वाकई में यह एक बहुत बड़ा शब्द आज के भारतीय न्यूज मीडिया चैनल की स्थिति दर्शाता है। सनसनीखेज भारतीय मीडिया को खतरे में डाल रहा है और आपके पास केवल दो विकल्प हैं; या तो आप महारत हासिल करें जो आपके दिमाग में इंजेक्ट किया गया है इन टी०वी० एंकरों द्वारा राजनैतिक रूप से फंसाए गए रायों में या अत्याचारी मीडिया के खिलाफ बोलें।

---

*एजेके–एमसीआरसी, जामिइ

गंगा जमुनी तहज़ीब और जामिया

निशाद उल हक*

गंगा जमुनी तहजीब की अनूठी मिसाल, यही है असली हिन्दुस्तान

हिन्दुस्तान की खूबसूरती है इसकी गंगा–जमुनी तहजीब। अनेकता में एकता और आपसी भाईचारा। हालांकि आजकल इसी खूबसूरती को खत्म करने में भी कुछ लोग लगे हुए हैं लेकिन ऐसी बहुत सी मिसालें हैं जो उम्मीद जगाती हैं, जिन्हें देखकर ये लगता है कि जो ताना–बाना इस देश में आपसी भाईचारे का है वो इतनी आसानी से टूटने वाला नहीं है। इन्सानियत ही सबसे बड़ा मजहब है, और सबसे बड़ा धर्म भी।

गंगा–जमुनी आखिर है क्या? और क्या है इसके मायने?

गंगा जमुनी तहजीब एक ऐसा विषय है जो मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है। मैं आगरा का रहने वाला हूँ जहाँ विभिन्न समुदाय और विभिन्न संस्कृति के लोग आपसी तालमेल बनाकर एक साथ रहते हैं। ऐसा शब्द जिसमें सैंकड़ों साल की तहज़ीब की बात बार बार होती है मैं एक ऐसे तिलिस्म में दाखिल हो जाता हूँ जिसमें दरवाजे ही दरवाजें हैं लेकिन क्या वो सब दरवाजे वाकई ऐसे रास्तों की ओर खुलते हैं जहाँ से मेरे पुर्खों ने एक मिली–जुली संस्कृति की बुनियाद रखी थी। क्या ऐसी संस्कृति जहाँ एक दूसरे की परंपराओं भावनाओं और धार्मिक आस्थाओं के प्रति सम्मान और समानता का भाव रहा है। देश के अलग अलग हिस्से में अलग अलग धर्मों और संस्कृतियों के लोग एक मिसाल बनकर एक साथ रह रहे हैं।

गंगा जमुनी तहजीब का आशय भारत की समन्वित संस्कृति से है। दरअसल मध्यकालीन भारत में गंगा के मैदान में आकर आक्रमणकारी इस्लामिक संस्कृति पश्चिम एशिया के विपरीत भारतीय संस्कृति को पचाने में कामयाब नहीं हो पाई उलटा वह उससे प्रभावित हुई। उसी तरह हिन्दू धर्म में भी कुछ नवीन तत्वों को आगमन हुआ। इस प्रकार गंगा और यमुना के मैदान में दोनों धर्मों के आपसी सम्मेलन में एक ऐसी संस्कृति का विकास हुआ जिसमें दोनों ही के गुण धर्म थे। इसी संस्कृति को गंगा जमुनी तहजीब कहा गया है। कुल मिलाकर गंगा जमुनी तहजीब के मर्म को समझना धर्मनिरपेक्ष और शान्तिपूर्ण सामाजिक संरचना के लिए बेहद जरूरी है।

गंगा जमुनी तहज़ीब की एक शानदार मिसाल है जामिया मिल्लिया इस्लामिया

जामिया मिल्लिया इस्लामिया शुरू से ही गंगा जमुनी तहजीब का केन्द्र रहा है। यहां सभी प्रकार और संस्कृतियों का सम्मान रखने वाले लोग एक साथ पाये जाते हैं। इस विश्वविद्यालय का नाम जामिया मिल्लिया इस्लामिया जरूर है लेकिन यहाँ तमाम जाति और समुदाय के लोग एक साथ मिलकर आपसी एकता के साथ तालीम हासिल करते हैं और बच्चों को शिक्षण देने वाले उस्तादों में भी यहाँ विभिन्न धर्मों और विभिन्न सोच के लोग हैं। जहाँ एक तरफ यहाँ इस्लामियत की तालीम दी जाती है वहीं दूसरी तरफ हिन्दू धर्मशास्त्र भी पढाया जाता है और इसके साथ भारतीय संस्कृति को भी पढ़ाया जाता है। यहाँ ईद और दीवाली समान उत्साह व उमंग के साथ मनाये जाते हैं। जहाँ एक ओर ईद जिस उत्साह से मनाई जाती है दीवाली पर भी जामिया मिल्लिया इस्लामिया को सजाया जाता है। दीवाली के पर्व पर जामिया विभिन्न रंगों की रोशनी से जगमगाती है। सभी धर्मों के लोग अपनी आस्था के अनुसार यहाँ एक साथ रहते हैं और किसी को किसी से कोई दिक्कत नहीं होती है। यहाँ हबीब तनवीर जैसे विश्वप्रसिद्ध कलाकारों ने ड्रामा किया है और उन्होंने जामिया मिल्लिया इस्लामिया की अनूठी संस्कृति को ड्रामा के जरिया दर्शाया है और उन्होंने आगरा बाजार जैसा ड्रामा किया जोकि खुद अपने आप में मिली जुली संस्कृति को दर्शाता है और इससे बड़ी संस्कृति का तालमेल क्या होगा कि जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष मुज़ीब रिजवी साहब रहे हैं वहीं दूसरी ओर उर्दू विभाग के अध्यक्ष गोपी चन्द नारंग साहब रहे हैं। कितनी अनुपम मिसाल है ये गंगा जमुनी तहज़ीब की।

अतः हिन्दुस्तान और जामिया मिल्लिया इस्लामिया विश्वविद्यालय की खूबसूरती गंगा जमुनी तहज़ीब है।

---

*आउटसोर्स कर्मचारी, पेंशन एवं सर्विस बुक अनुभाग, जामिइ

जीवन के मूल्य एवं शिष्टाचार

नदीम अख़्तर*

मनुष्य के सद्भाव, सद्विचार और सद्गुण नैतिक मूल्यों का सृजन करते हैं। इन अच्छे गुणों में कई गुण शामिल होते हैं जैसे कि प्रेम, दयालुता, मैत्री भाव, सच्चाई और ईमानदारी आदि। हम जिस समाज में रहते हैं, वही समाज हमें अपने जीवन में कई सारे नैतिक मूल्यों का प्रसार करने में मदद करता है। इन्हीं नैतिक मूल्यों के कारण समाज में रहने वाले लोगों को सामाजिक समस्याओं को संभालने में और अच्छा जीवन जीने में आसानी होती है।

नैतिक मूल्य हमारे अच्छे जीवन के लिए ज़रूरी और महत्वपूर्ण है। इसलिए हमें नैतिक मूल्यों का पालन करना होगा, जिससे हम एक अच्छे और सफल व्यक्ति बन सकते हैं।

जीवन जीने के कुछ दिलचस्प पॉइंट्स सूक्तियों, शेरो–शायरी के साथ लिखे गए हैं :

सादा जीवन जिएँ

सिंपल लोग ही लाइफ के मज़े लेते हैं।
चालाक लोग तो बस उलझे रहते हैं।।

लक्ष्यः

लक्ष्य सही होना चाहिएः
काम तो दीमक भी दिन रात करती है
पर वो निर्माण नहीं, विनाश करती है।

अगर अपने लक्ष्य को हासिल करना चाहते हो तो तरीका बदलो, इरादा नहीं।

कठिन परिश्रम

अगर आप कुछ ऐसा पाना चाहते हैं जो आपने पहले कभी नहीं पाया, तो आपको कुछ ऐसा करना पड़ेगा जो अपने पहले कभी नहीं किया।

बात करने का तरीका

बात करने का मज़ा उनके साथ आता है जिनके साथ बात करते हुए कुछ भी सोचना ना पड़े। बड़ा आदमी वो है जिससे मिलने के बाद कोई खुद को छोटा महसूस न करे।

घमंड से अपना सर ऊँचा न करें:

जीतने वाले भी अपना गोल्ड मैडल झुक कर हासिल करते हैं।

जिंदगी की परेशानियों से डरें नहीं:

झूला जितना पीछे जाता है उतना आगे भी आता है इसलिए जिंदगी का झूला अगर पीछे जाए तो डरिए मत, ये आगे भी आएगा।

अपने किरदार पे इतना यकीन रखो कि कोई आपको छोड़ तो सके मगर भुला न सके।

मुस्कराहट लाएं

सदैव कोशिश करें कि आपकी वजह से औरों के चेहरे पर मुस्कान आए।

जिंदगी तब बेहतर होती है जब आप खुश होते हैं
लेकिन जिंदगी तब बेहतरीन होती है जब आपकी वजह से कोई दूसरा खुश होता है।

निराश न हो

जीवन में अगर कोई आपके किए हुए कार्य की तारीफ़ ना करे तो चिंता मत करना क्योंकि...

आप इस दुनिया में रहते हैं जहाँ जलता तो तेल और बाती है पर लोग कहते हैं कि दीपक जल रहे हैं।

शिकायत सोच–समझकर करें:

कभी–कभी हमें जिनसे शिकायत हो जाती है वो हमसे भी दुख में गुजर रहे होते हैं हमें यूँ भी सोचना चाहिए।

जीवन में शांति चाहते हैं तो दूसरों की शिकायत करने से बेहतर है खुद को बदल लें। क्योंकि पूरी दुनिया में कारपेट बिछाने से खुद के पैरों में चप्पल पहन लेना अधिक सरल है।

रिश्ते संभालकर रखो

जीवन में रिश्तों का बहुत महत्त्व होता है। रिश्तों के बिना

*हिंदी टाइपिस्ट, राजभाषा हिंदी प्रकोष्ठ, जामिइ

जीवन कुछ नहीं है, नीरस है। इसलिए अपने रिश्तों को संभालकर रखो, हमेशा जोड़ने की कोशिश करो, तोड़ने की नहीं।

किसी रिश्ते को तोड़ने से पहले एक बार अपने आप से पूछ जरूर लेना कि आज तक उस रिश्ते को निभा क्यों रहे थे।

रिश्तों को कुछ इस तरह बचा लिया करो
कभी मान लिया करो कभी मना लिया करो।

सच्चाई के रास्ते पर चलें

सच्चाई के रास्ते पर चलने का एक फ़ायदा ये भी है कि इस रास्ते पर भीड़ कम मिलती है।

अपने को किसी की मतलब की वस्तु न समझें

अगर लोग आपको सिर्फ ज़रूरत पर याद करते हैं तो बुरा मत मानिए। लोगों को मोमबत्ती तभी याद आती है, जब अंधेरा हो जाता है।

सुकून की तलाश

यदि आप सुकून चाहते हैं तो कभी दूसरों को बदलने की अपेक्षा मत करो, स्वयं बदलो, जैसे कंकड से बचने के लिए स्वयं को जूते पहनना उचित है न कि पूरी धरती पर कारपेट बिछाना।

बात करने का तरीका

कहा भी जाता है कि

बड़ों से बात करने का ढंग आपकी त़मीज़ बताता है और छोटो से तमीज़ से बात करने का ढंग आपकी परवरिश।

जीवन में कभी आगे होने का घमंड और आख़िरी होने का ग़म न करें

परेड में पीछे मुड बोलते ही पहला आदमी आख़िरी और आख़िरी आदमी पहले नंबर पर आ जाता है। इसलिए जीवन में कभी आगे होने का घमंड और आखिरी होने का ग़म न करे।

झुकें / डाउन टू अर्थ रहें।

कलम तभी साफ और अच्छा लिख पाती है, जब वह झुक कर चलती है, यही हाल ज़िंदगी में इंसान का होता है।

अल्लाह / भगवान पर भरोसा रखें

अपने अल्लाह / भगवान पर पूरा भरोसा रखें। उसकी इबादत / पूजा करें।

कौन कहता है अल्लाह नज़र नहीं आता
एक वो ही नज़र आता है जब कुछ नज़र नहीं आता।

एक वृक्ष की हत्या

कुँवर नारायण

अबकी घर लौटा तो देखा वह नहीं था–
वही बूढ़ा चौकीदार वृक्ष
जो हमेशा मिलता था घर के दरवाजे पर तैनात।

पुराने चमड़े का बना उसका शरीर
वही सख़्त जान
झुर्रियोंदार खुरदुरा तना मैला–कुचैला,
राइफ़िल–सी एक सूखी डाल,
एक पगड़ी फूल पत्तीदार,
पाँवों में फटा–पुराना जूता
चरमराता लेकिन अक्खड़ बल–बूता

धूप में बारिश में
गर्मी में सर्दी में
हमेशा चौकन्ना
अपनी ख़ाकी वर्दी में

दूर से ही ललकारता, "कौन?"
मैं जवाब देता, "दोस्त!"
और पल भर को बैठ जाता
उसकी ठंडी छाँव में

दरअसल, शुरू से ही था हमारे अंदेशों में
कहीं एक जानी दुश्मन
कि घर को बचाना है लुटेरों से
शहर को बचाना है नादिरों से
देश को बचाना है देश के दुश्मनों से
बचाना है–
नदियों को नाला हो जाने से
हवा को धुआँ हो जाने से
खाने को ज़हर हो जाने से:
बचाना है–जंगल को मरुस्थल हो जाने से,
बचाना है–मनुष्य को जंगल हो जाने से।

एक बार फिर

मुमताज़ अली*

एक बार फिर ख़ामोश लबों पर मुस्कुराहट आई थी मगर,
चन्द लम्हें ही बरकरार रही मंझधार में छोड़ गई ये सफ़र
अब कुछ ऐसा महसूस हो रहा है कि दिल नहीं असल में खिलौना बाकी है।
सारा ज़माना आज़मा लिया आहिस्ता–आहिस्ता से असल साथी तो बस साकी है।
ना कोई उम्मीद है न तमन्ना है कोई इस वीरान दिल में दोस्तो,
अब जीने का भी नहीं कोई लुत्फ़ मिलेगा फिर से इसी मुश्किल में हूँ दोस्तो।
बन्द आँखों को फिर से जगा दिया उसने
मरने तक यूँ ही खुली रहेंगी तेरे इन्तज़ार में,
रूबरू हो जाओ एक बार फिर से मेरे
ख़्वाहिश बाकी ना रहेगी अब मेरे प्यार में।
याद करेगा ज़माना हमारे टूटे रिश्तों को
कुछ तोहमत मुझ पर लगेगी कोई ताना तुमको देगा।
मैं तो चैन से कब्र में दफ़न हो जाऊँगा मगर,
ये याद और बेदर्द ज़माना तुम्हें जीने नहीं देगा।।
हम भी कर लेंगे राज़ दफ़न सीने में
सबसे कह देंगे कुछ नफ़ा नहीं है जीने में
कुछ ज़िन्दगी मांगेगे यकीन न करके बातों पर
'अली' ज़माने से कह जाएगा कुछ ख़ता नहीं है पीने में।।

*सहायक, शिक्षा संकाय, जामिइ

हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है– माखनलाल चतुर्वेदी

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गौरव का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता– डॉ. राजेंद्र प्रसाद

हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय–हृदय से बातचीत करता है और हिंदी हृदय की भाषा है– महात्मा गाँधी

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है – सुमित्रानंदन पंत्र

ग़ज़ल

डॉ. तबस्सुम नकी*

लबों पे मुस्कराहट और लहजा गुलाब रखते हैं
लोग चेहरे पे अपने यूँ भी नकाब रखते हैं

मिलना बिछड़ना और बिछड़ के फिर से मिलना
ये आशिक शब–ओ–रोज़ का हिसाब रखते हैं

आँखों की नमी से अन्दाजाए गम ना कर
हम खुशी में भी आँखें अश्कबार रखते हैं

चुप हों तो कहते हैं कुछ तो कहिये कि बात चले
जो लब कुशा हों तो तोहमत मुँह में ज़बान रखते है

फक्त इतनी आरज़ू है वो भी कभी आईना देखें
लोग जो कहते हैं हम दिलों में अनाद रखते हैं

हवा के रुख पे चराग रखो जिद ये कि जलाए रखो
हमारे शहर के निगहबां कलंदराना मिजाज रखते हैं।

*एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग, जामिइ

फिर वही शाम

मज़ाज म. सिद्दीक़ी*

फिर वही शाम
तेरा संग छूटना
याद दिलाती है
तड़पती है
मुझको ...

काश तुम्हारी बात
मान ली होती
उस शाम
अब रुलाती है
मुझको ...

रिश्ता दिल से होना चाहिए,
शब्दों से नहीं,
नाराजगी शब्दों में होनी चाहिए,
दिल में नहीं
हाँ, फिर वही शाम

* ए.जे.के., एम.सी.आर.सी

संस्थागत रैंकिंग में पुस्तकालयों एवं पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका

राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (National Institutional Ranking Framework) के विशेष संदर्भ मे

डॉ. सुफियान अहमद*

पुस्तकालय न केवल छात्रों के मस्तिष्क और विचारों के समग्र पोषण में बल्कि शैक्षणिक संस्थान की रैंकिंग में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पुस्तकालय सीखने के अवसर पैदा करते हैं, साक्षरता और शिक्षा का समर्थन करते हैं तथा नए विचारों और ष्टिकोणों को आकार देते हैं जो मूल्य वर्धित अनुसंधान (Value added research) के लिए महत्वपूर्ण हैं। पुस्तकालयों के बिना अनुसंधान और मानव ज्ञान को आगे बढ़ाना मुश्किल होगा। वे भविष्य की पीढ़ियों के लिए विश्व के संचयी ज्ञान और विरासत को भी संरक्षित करते हैं। पुस्तकालयाध्यक्ष संकाय सदस्यों और शोधार्थियों को उनके गुणवत्तापूर्ण शोध और प्रकाशनों में सहायता करके अपने संबंधित संस्थानों की उच्च रैंकिंग प्राप्त करने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। यह अनुसंधान नैतिकता और शैक्षणिक सत्यनिष्ठा (Research Ethics & Academic Integrity), मुक्त अनुसंधान प्रकाशन (Open Research Publishing), साहित्यिक चोरी (Plagiarism), उद्धरण (Citations), मापन और अनुसंधान प्रभाव को अधिकतम करने (Measuring & Maximizing Research Impact), आईपीआर और कॉपीराइट (IPR & Copyrights), व्याकरण उपकरण (Grammarly tools) आदि से संबंधित नियमित अभिविन्यास कार्यक्रमों (Orientation Programmes), सेमिनारों, सम्मेलनों आदि के आयोजन के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, पुस्तकालयाध्यक्ष व्यक्तिगत संकाय सदस्यों और शोधार्थियों को ऐसे सभी मामलों में ऑनलाइन और ऑफलाइन मोड के माध्यम से निरंतर सहायता (24x7 help) प्रदान करने में सक्रिय भूमिका निभा सकते हैं।

राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग ढांचा (National Institutional Ranking Framework)

29 सितंबर 2015 को, राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) को मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) द्वारा अनुमोदित किया गया था और माननीय मानव संसाधन विकास मंत्री द्वारा लॉन्च किया गया था। यह ढांचा देश भर के संस्थानों को रैंक करने के लिए एक कार्यप्रणाली की रूपरेखा तैयार करता है। हर साल उच्च शिक्षा संस्थानों की एनआईआरएफ रैंकिंग की प्रक्रिया की घोषणा की जाती है और विभिन्न विश्वविद्यालयों और संस्थानों की रैंकिंग, इंजीनियरिंग, प्रबंधन, फार्मेसी, कॉलेज, वास्तुकला, कानून, जैसे विभिन्न विषयों में निर्धारित मापदंडों के अनुसार उनके द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों के आधार पर की जाती है। संस्थानों की समग्र रैंकिंग मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा गठित कोर कमेटी की सिफारिशों पर आधारित होती है।

राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क का लाभ (Advantage of NIRF Ranking)

1. छात्रों को अध्ययन का विकल्प देता है और प्रवेश के लिए नए छात्रों को आकर्षित करता है।
2. संस्थानों के मूल्य और प्रतिष्ठा में सुधार करता है।
3. कैंपस प्लेसमेंट के लिए नई कंपनियों को आकर्षित करता है।
4. छात्रों के प्लेसमेंट में आसानी प्रदान करता है ।
5. सहयोग और अनुसंधान निधि आदि की अधिक संभावना प्रदान करता है ।

विश्व विश्वविद्यालय रैंकिंग के अंतर्गत भारतीय विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में सुधार के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित भारत के विश्वविद्यालयों और कॉलेजों की रैंकिंग के मापदंड अग्रलिखित हैं:

*उप–पुस्तकालयाध्यक्ष, डॉ. जाकिर हुसैन पुस्तकालय, जामिइ

तालिका 1: विश्वविद्यालयों की रैंकिंग के लिए राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग ढांचा मापदंड
(NIRF Parameters for Ranking of Universities)

क्रमांक	मापदंड	अंक	महत्व
1	शिक्षण, सीखना और संसाधन (Teaching, Learning & Resources)	100	30%
2.	अनुसंधान उत्पादकता, प्रभाव और बौद्धिक संपदा अधिकार (Research Productivity, Impact and IPR)	100	40%
3.	स्नातक परिणाम (Graduation Outcome)	100	5%
4.	आउटरीच और समावेशिता (Outreach and Inclusivity)	100	15%
5.	धारणा (Perception)	100	10%
	कुल	500	100%

स्रोतः एनआईआरएफ फ्रेमवर्क

राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग ढांचा में पुस्तकालयों एवं पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका

राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग ढांचा (National Institutional Ranking Framework) के अनुसार, केवल 20 अंक हैं जहाँ अधिकतम अंक प्राप्त करने की दिशा में पुस्तकालय की प्रत्यक्ष भूमिका होती है जिसमें प्रति छात्र पुस्तकालय संसाधनों पर वार्षिक व्यय, भौतिक संसाधनों, पुस्तकों, पत्रिकाओं आदि पर वास्तविक वार्षिक व्यय, इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों सहित वास्तविक वार्षिक व्यय शामिल हैं। इसके अलावा, पुस्तकालय एवं पुस्तकालयाध्यक्ष अन्य मापदंडों में भी अपने संबंधित संस्थानों द्वारा कुल 115 अंकों को प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, जैसेः

1 (सी) पुस्तकालय और प्रयोगशाला सुविधाओं के लिए मापदंड – 40 अंक

इस मापदंड के अंतर्गत 'पुस्तकालय सुविधाओं' के लिए केवल 20 अंक हैं जिसमें प्रति छात्र पुस्तकालय संसाधनों पर वार्षिक व्यय, भौतिक संसाधनों, पुस्तकों, पत्रिकाओं आदि पर वास्तविक वार्षिक व्यय, इलेक्ट्रॉनिक पुस्तकों, इलेक्ट्रॉनिक पत्रिकाओं सहित वास्तविक वार्षिक व्यय शामिल हैं, आदि। अधिकांश पुस्तकालयों को इस मापदंड के तहत अधिकतम अंक मिलते हैं।

2 (ए) प्रकाशन के लिए संयुक्त मापदंड – 45 अंक

इस मापदंड के अनुसार, रैंकिंग के लिए जाने का इरादा रखने वाले संस्थान अपने संकाय द्वारा प्रकाशनों के बारे में

क्रमांक	मापदंड	अंक
1	1 (सी) पुस्तकालय (20 अंक) और प्रयोगशाला सुविधाओं के लिए (20 अंक) (Metric for Library & Laboratory Facilities)	40
2.	2 (ए) प्रकाशन के लिए संयुक्त मापदंड (Combined Metric for Publications)	45
3.	2 (बी) उद्धरणों के लिए संयुक्त मापदंड (Combined Metric for Citations)	45
4.	2 (सी) बौद्धिक संपदा अधिकार (Intellectual Property Rights)	10
5.	4 (डी) आउटरीच फुटप्रिंट (सतत् शिक्षा, सेवाएं) (Outreach Footprint [Continuing Education] Services)	5
6.	6. ई) विकलांग व्यक्तियों के लिए सुविधाएं (Facilities for Differently-Abled Persons)	10
	कुल	155

स्रोतः एनआईआरएफ फ्रेमवर्क

डेटा जमा करेंगे। इन सभी प्रकाशनों को मुख्य रूप से वेब ऑफ साइंस, स्कोपस, गूगल स्कॉलर और इंडियन साइटेशन इंडेक्स में अनुक्रमित (indexed) होना चाहिए तथा पुस्तकों को प्रतिष्ठित प्रकाशकों द्वारा ISBN नंबरों के साथ प्रकाशित होना चाहिए ।

यहाँ, लाइब्रेरियन प्रभावी लेखन और प्रकाशन में लेखकों (संकाय सदस्यों और शोध विद्वानों) को सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करके महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। 'प्रभावी लेखन' के लिए पुस्तकालयाध्यक्ष 'क्या लिखें' और 'कैसे लिखें' की सलाह दे सकते हैं। इसी तरह, लाइब्रेरियन यह भी सुझाव दे सकते हैं कि क्या प्रकाशित किया जाए, कैसे प्रकाशित किया जाए, कहां प्रकाशित किया जाए, ओपन एक्सेस पब्लिशिंग बनाम पारंपरिक प्रकाशन के लाभ, 'व्याकरण' टूल (ऑनलाइन लेखन सहायक) का उपयोग आदि, जिसके परिणामस्वरूप उनका लेखन प्रभावी होगा तथा लेखकों के साथ–साथ उनके संस्थानों के प्रभाव कारक (Impact Factor) को अधिकतम करेगा।

2 (बी) उद्धरणों के लिए संयुक्त मापदंड – 45 अंक

इस मापदंड के तहत पिछले तीन वर्षों में प्रकाशित कुल उद्धरणों (Citations) की जानकारी का आकलन किया जाता है। इस उद्देश्य के लिए चार लोकप्रिय डेटाबेस जैसे स्कोपस, वेब ऑफ साइंस, गूगल स्कॉलर और इंडियन साइटेशन इंडेक्स से औसत संख्या का उपयोग किया जाता है ।

प्रायः यह देखा गया है कि जागरूकता की कमी के कारण, सभी दक्षताओं के बावजूद, लोगों ने अपने लेख घटिया पत्रिकाओं में प्रकाशित करवाए जिससे उन पर खराब शोध प्रभाव पड़ा। बहुत से लोग मेंडेले, जोटेरो, एंडनोट, आदि जैसे उद्धरणों और संदर्भ प्रबंधन उपकरणों (Citations & Reference Management Tools) से अवगत नहीं होते हैं, जिसके कारण उनका बहुमूल्य समय नष्ट हो जाता है। यहां भी पुस्तकालयाध्यक्ष लेखकों को उनके शोध प्रभावों को प्रभावी बनाने के लिए संभावित सहायता प्रदान कर सकते हैं जिसके परिणामस्वरूप समय की बचत के साथ लेखकों को उनके प्रकाशनों के मुकाबले उच्च उद्धरण मूल्य (Higher Citation Value) प्राप्त होगा।

2 (सी) बौद्धिक संपदा अधिकार (Intellectual Property Rights) – 10 अंक

आईपीआर और पेटेंट के लिए अंकों का वितरण इस प्रकार हैः

स्वीकृतः 4 अंक, दायरः 2 अंक, और लाइसेंस प्राप्तः 4 अंक। आईपीआर में मोटे तौर पर पिछले तीन वर्षों के पेटेंट और डिजाइन पर आधारित जानकारी शामिल होती है।

अधिकांश पुस्तकालयाध्यक्ष आजकल आईपीआर और कॉपीराइट से संबंधित मुद्दों के लिए पर्याप्त रूप से प्रशिक्षित होते हैं। परिणामस्वरूप पुस्तकालयाध्यक्ष हितधारकों को सहायता और मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं कि कैसे और कहाँ से पेटेंट, कॉपीराइट, डिजाइन आदि को पंजीत एवं लाइसेंस प्राप्त किया जा सकता है।

4 (ए) आउटरीच फुटप्रिंट (सतत् शिक्षा, सेवाएं) – 25 अंक

इस मापदंड के तहत, प्रतिभागियों की संख्या, शिक्षक प्रशिक्षण और संबंधित आउटरीच गतिविधियों, ई–पीजी पाठशाला, सीईसी, एनएमई–आईसीटी, आदि जैसे ई–सामग्री निर्माण कार्यक्रमों में भागीदारी के साथ आयोजित पुनश्चर्या और अभिविन्यास पाठ्यक्रमों के नाम और संख्या, गुणवत्ता सुधार में संकाय की सुविधा आदि के बारे में डेटा जमा करना होता है।

पुस्तकालय, विशेष रूप से विश्वविद्यालय पुस्तकालय, नियमित रूप से अभिविन्यास और अन्य पुनश्चर्या कार्यक्रम (Orientation and other refresher programmes) आयोजित करते हैं। कभी–कभी पुस्तकालयाध्यक्ष भी ई–पीजी पाठशाला आदि से संबंधित ई–सामग्री में योगदान करते हैं। यहां भी पुस्तकालय/पुस्तकालयाध्यक्ष इस मापदंड के तहत 25 अंकों में से कम से कम 5 अंक प्राप्त करने में मदद कर सकता है।

4 (ई) विकलांग व्यक्तियों के लिए सुविधाएं (Facilities for Differently -Abled Persons)– 10 अंक

विकलांग व्यक्तियों को प्रदान की जाने वाली सुविधाओं के लिए अंक इस प्रकार हैं:

रैंप, लिफ्ट और वॉकिंग एड्स हेतु प्रत्येक के लिए 2 अंक, निःशक्तजनों के अनुकूल शौचालयों और सॉफ्टवेयर सहित श्रव्य–दृश्य सहायता हेतु प्रत्येक के लिए 1.5 अंक और ब्रेल/विशेष प्रयोगशालाओं के लिए 1 अंक।

आमतौर पर, शारीरिक रूप से विकलांग व्यक्तियों की

सहायता के लिए विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों में एक अलग अनुभाग होता है जोकि रैंप, लिफ्ट, चलने में सहायक उपकरण (जैसे व्हीलचेयर), विकलांगों के अनुकूल शौचालय, ब्रेल और अन्य दृश्य–श्रव्य सामग्री और सॉफ्टवेयर सुविधाओं आदि जैसी सभी सुविधाओं से सुसज्जित होता है, जहाँ पुस्तकालय इस मापदंड के तहत निर्धारित पूर्ण अंक (10 अंक) अर्जित कर सकता है ।

निष्कर्ष

किसी भी शैक्षणिक संस्थान के समग्र विकास में पुस्तकालय की बड़ी भूमिका होती है। पुस्तकालय की क्षमता एवं विकास काफी हद तक उसके पुस्तकालयाध्यक्ष की क्षमता एवं दक्षता पर निर्भर करती है। पुस्तकालयाध्यक्षों की भूमिका आजकल पुस्तकालय प्रशासन और प्रबंधन के कार्य तक ही सीमित नहीं है यद्यपि उनसे उच्च गुणवत्ता वाले अनुसंधान और प्रकाशनों के मामले में अपने संस्थानों को विशेषज्ञ सेवाएं प्रदान करने की भी अपेक्षा की जाती है। उन पर हर संभव मदद देकर अपने संस्थानों की रैंकिंग बढ़ाने की बड़ी जिम्मेदारी की अपेक्षा होती है जिसे नियमित रूप से प्रकाशन नैतिकता और शैक्षणिक अखंडता (Publishing Ethics & Academic Integrity), अनुसंधान प्रभाव (Research Impact), अनुसंधान डेटा प्रबंधन (Research Data Management), खुला अनुसंधान प्रकाशन (Open Research Publishing), साहित्यिक चोरी उपकरण और तकनीक (Plagiarism Tools & Techniques), आईपीआर और कॉपीराइट मुद्दे (IPR & Copyright Issues), संदर्भ प्रबंधन उपकरण (मेंडेली, जोटेरो, एंडनोट, आदि) (Reference Management Tools such as Mendeley, Zotero, End Note, etc.) विषयों से संबंधित अभिविन्यास कार्यक्रमों (Orientation programmes), सेमिनारों, सम्मेलनों आदि का आयोजन करके प्राप्त किया जा सकता है – प्रकाशन और अनुसंधान से संबंधित सभी हितधारकों के ऑनलाइन और ऑफलाइन प्रश्नों को देखने के लिए पुस्तकालय में अलग सेल होना चाहिए। इस सेल के तहत काम करने वाले व्यक्तियों को प्रकाशनों, साहित्यिक चोरी, उद्धरण, आईपीआर और कॉपीराइट आदि से संबंधित ऐसे सभी प्रश्नों एवं मामलों को संभालने के लिए अच्छी तरह से प्रशिक्षित होने की आवश्यकता है क्योंकि तभी पुस्तकालय एवं पुस्तकालयाध्यक्ष अधिकतम अंक प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं, अर्थात 500 में से 135 अंक जोकि राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (National Institutional Ranking Framework) द्वारा निर्धारित कुल अंकों का 27: है।

मैथिलीशरण गुप्त

नर हो, न निराश करो मन को
कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में रह कर कुछ नाम करो
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो, न निराश करो मन को
संभलों कि सुयोग न जाय चला
कब व्यर्थ हुआ सदुपाय भला
समझो जग को न निरा सपना
पथ आप प्रशस्त करो अपना
अखिलेश्वर है अवलंबन को
नर हो, न निराश करो मन को

विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी
विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी
मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करे सभी
हुई न यों सु–मृत्यु तो वृथा मरेय वृथा जिये
नहीं वहीं कि जो जिया न आपके लिए
यही पशु–प्रवृत्ति है कि आप आप ही चरे
वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे

शिशिर न फिर गिरि वन में
जितना माँगे पतझड़ दूँगी मैं इस निज नंदन में
कितना कंपन तुझे चाहिए ले मेरे इस तन में
सखी कह रही पांडुरता का क्या अभाव आनन में
वीर जमा दे नयन नीर यदि तू मानस भाजन में

स्त्री–पुरुष असमानता संबंधी मुहावरे और लोकोक्तियों का पुनरावलोकन

डॉ. अंदलीब*

'गागर में सागर' भरने वाले ये मुहावरे और लोकोक्तियाँ हमारे लोकाचार, रीति, नीति और पूर्वजों के अनुभव की परिचायक होती हैं। ये हमारे समाज की वास्तविकता का दर्पण होती है। हालाँकि इसका उल्लेख करना कठिन होगा कि इनकी निर्मिति कब हुई। ये चिरकाल से भाषिक प्रयोग में चली आ रही कहावतें हैं जो हमारे पूर्वजों के अनुभवों को चरितार्थ करती हैं। परंतु विमर्श का विषय यह है कि आज के समय में ये मुहावरे या लोकोक्तियाँ कितनी खरी उतरती हैं और कहीं अचेतन स्तर पर वे हमारे सामाजिक ढ़ांचे के लिए घातक तो नहीं हैं? इनमें से कुछ तो वर्ग, जाति, लिंग, क्षेत्रीय या भाषाई आधार पर समाज में असामनता को बढ़ावा देती हैं। इस आलेख में लिंग के आधार पर स्त्री और पुरुष के मध्य असमानता बढ़ाने वाली कुछ हिंदी लोकोक्तियों और मुहावरों का विश्लेषण किया गया है कि वास्तव में ये मुहावरे या लोकोक्तियाँ स्त्रियों के विषय में क्या मुख्य संदेश देना चाहती हैं। यह बिंदु भी स्मरण रहे कि ये कहावतें हवा में ही नहीं बनी बल्कि इनके पीछे सामाजिक अवलोकन था और ये अपने समय की सामूहिक सामाजिक सोच को दर्शाती हैं। परंतु प्रश्न यह है कि कहीं यह सोच पितृसत्तात्मकता की बेड़ियों में तो जकड़ी हुई नहीं है जिसमें पुरुषों के बल, सामर्थ्य, तथाकथित बुद्धि, व्यापार कुशलता आदि को आधार बनाकर स्त्रियों पर वर्चस्व प्राप्त कर लेना अभीष्ट हो जहाँ स्त्रियों के गुणों की उपेक्षा करते हुए, उनकी महत्ता (और कभी–कभी अस्तित्व) को नकारते हुए, कुछ दुर्गुणों (जोकि पुरुषों में भी पाए जा सकते हैं) का सामान्यीकरण करना ही लक्ष्य हो, ताकि न पुरुष स्त्री को उसका अपेक्षित दर्जा दे सके और न वह स्वयं इतनी जुर्रत ही करे कि अपने हक को हक भी समझ सके बल्कि समाज में दोयम दर्जे पर ही रहे। हद तो यह है कि इस पितृसत्तात्मक सोच की लपेट में हमारे कुछ कवि और लेखक गण भी आ गए हैं। अपनी कविता 'पटकथा' में सुदामा पांडेय 'धूमिल' मादा (स्त्री) को छलपूर्ण दर्शाते हैं–

"...मैंने हरेक को आवाज दी है
हरेक का दरवाजा खटखटाया है,
मगर बेकार ..... मैंने जिसकी पूंछ उठायी है उसको मादा पाया है।"

इसी कड़ी में आइए कुछ हिंदी मुहावरों और लोकोक्तियों का विश्लेषण करते हैं –

पुत्री से जुड़े मुहावरे और लोकोक्तियाँः

बेटा आँख होता है और बेटी नाक (बेटी का इज्जत से संबंधित होना)

बेटी मरे भागवान की, बेटा मरे कमबख्त का (बेटी का मरना सौभाग्य है)

बेटी के बाप की पगड़ी हमेशा नीची रहती है (बेटी का पिता झुककर रहता है)

लड़कियाँ पराया धन होती हैं (लड़कियों के जीवन से ससुराल वालों को ही लाभ होता है)

कन्यादान कर लें, गंगा नहा लें (बेटी का विवाह करने के उपरांत ही माता–पिता निश्चिंत होते है)

मायके से डोली, ससुराल से अर्थी (ससुराल में दुःख के बावजूद मृत्युपर्यंत रहना)

हमारे समाज में पिता पुत्रियों को और भाई बहनों को अपनी खोखली प्रतिष्ठा और मर्यादा से जोड़कर देखते हैंद्य इज्जत के नाम पर वे हमेशा ही पुरुषों के निशाने पर रही हैं। यहाँ तक कि कभी–कभी उन्हें शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत आवश्यकताओं से भी वंचित रखा जाता है। बेटी और बेटे की परवरिश में परिवार दोहरा मापदंड अपनाता है। गुणवत्ता और रोजगारपरक शिक्षा, नौकरी करने, संपत्ति में हिस्सा प्रदान करने आदि क्षेत्रों में हमें भेदभाव देखने को मिलता है। भले ही यह अतिश्योक्ति प्रतीत होती हो लेकिन बेटी के मरने को सौभाग्य और बेटे के मरने को दुर्भाग्य समझना यह दर्शाता है कि एक समय में समाज में लड़कियों का अस्तित्व कोई काबिल–ए–जिक्र चीज न था। अब तक समझा यह जाता है कि लड़कियाँ पराई चीज हैं और उनका असल घर उनका ससुराल है। माता–पिता भी इस फिक्र में

*अतिथि संकाय, शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग, शिक्षा संकाय, जामिइ

रहते हैं कि लड़कियों का विवाह कर देना ही गंगा नहाना है। लड़कियों का होना इतना बड़ा बोझ है कि उनका विवाह करने के उपरांत भी पिता को उसके सुसराल वालों के सामने हमेशा इसलिए नीचा बनकर रहना पड़ता है कि कहीं वे उसकी बेटी को दुःख न पहुँचाएँ। हद तो यह है कि बेटी के ससुराल में दुखी रहने पर भी उसे मृत्युपर्यंत ससुराल में ही रहने और निर्वाह करने का उपदेश दिया जाता है।

पत्नी से जुड़े मुहावरे और लोकोक्तियाँः

– पति परमेश्वर होता है (पति ईश्वर से भी बड़ा)

– जोरू का गुलाम होना (पत्नी की हर बात मानना)

– जोरू टटोले गठरी, माँ टटोले अंतड़ी (पत्नी को पति के माल की परवाह, जबकि माँ को बेटे की भूख की)

– अभागे की गाय मरती है और भाग्यवान की बीवी (पत्नी का मरना सौभाग्य है)

इससे बड़ी लैंगिक असमानता की मिसाल और क्या होगी कि स्त्री और पुरुष में लगभग समान क्षमताओं के पाए जाने के बावजूद पति को पत्नी के लिए ईश्वर से भी बड़ा बताया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर यदि कोई पति अपनी पत्नी की सेवा करता है या उसकी कोई बात मान लेता है या घर का कोई काम कर देता है तो यह समाज उसे जोरू का गुलाम कहने से भी बाज नहीं आता। इससे भी आगे बढ़कर स्त्री को इतनी लालची प्रवृत्ति का दर्शाया जाता है कि उसे केवल पति की धन–संपत्ति से मतलब होता है, जबकि उसकी माता को ही ये परवाह होती है कि उसने कुछ खाया या नहीं। वास्तव में यह कहावत दो प्रकार से स्त्रियों पर प्रहार करती है। पहला, स्त्री लालची प्रवृत्ति की होती है, दूसरा, पुरुष के खाने–पीने का ध्यान रखना केवल घर की स्त्रियों का ही कर्तव्य है। हद तो यह है कि गाय का मरना दुर्भाग्य हो सकता है लेकिन पत्नी का मरना पति के सौभाग्य का सूचक दर्शाया गया है। ऐसी ही एक और उक्ति में बेटी के मरने को भी सौभाग्य बताया गया है।

वधू से से जुड़े मुहावरे और लोकोक्तियाँः

देखने की पतली सुथरी, लट खोल लड़ी सिगरी बखरी (सुंदर वधू का लड़ाका होना)

कलीयुगी बहू में तनिक नहीं हया, डोली से उतरे करे पिया–पिया (वधू को केवल पति से ही मतलब होना)

दूधो नहाओ, पूतो फलो (समृद्धि और पुत्र उत्पत्ति का आशीर्वाद)

पहली लोकोक्ति से स्पष्ट होता है कि स्त्री कितनी ही सुंदर क्यों न हो, लड़ाका होती है। पति से प्रणय वार्ता करने वाली स्त्री को बेहया, बशर्म जैसी उपाधियों से नवाजा जाता है। उपर्युक्त लोकोक्तियों में एक तरफ वधू को लड़ाका और बेशर्म बताया गया है। दूसरी तरफ पुत्रों को जन्म देने वाली बनने की कामना की जाती है। इससे यह भी पता चलता है कि स्त्रियाँ ही पुत्र पैदा करें और फिर भी पुत्री (भावी स्त्री) के जन्म की कद्र न हो।

भाभी से जुड़े मुहावरे और लोकोक्तियाँः

जीवे तेरा भ्रा, पाश्भी तेरी गली–गली (भाभी पर भाई की महत्ता दर्शाना)

भाई जीवित रहना चाहिए, भाभियाँ तो बहुत मिल जाएंगी। इस लोकोक्ति के माध्यम से स्त्री पर पुरुष की महत्ता को प्रतिपादित करने का प्रयत्न किया गया है।

स्त्री की तथाकथित सामान्य प्रवृत्तियों से जुड़े अन्य मुहावरे और लोकोक्तियाँः

चूड़ियाँ पहनना (पुरुष का कायर होना)

औरत छोटी या मोटी, विष की बूटी (सब प्रकार की औरतें बुरी होती हैं)

डायन भी सात घर छोड़ देती है (अपनों के साथ बुरा करने वाली दुष्ट स्त्री)

दूती–दूती कहाँ चली, खसम पूत कुसवाने चली (चुगलखोर स्त्री अपनों को भी बदनाम करती है)

समाज ने पहले तो विवाहित स्त्रियों को सौंदर्य के नाम पर चूड़ी, बिंदी, मंगलसूत्र, मेहंदी आदि प्रतीकों को धारण करने के लिए बाध्य किया, फिर बाद में इन्हें स्त्री की बलहीनता से जोड़ दिया। किसी पुरुष के अयोग्य होने या साहसी न होने में भी जबरदस्ती स्त्रियों की चूड़ियों को घसीटा गया है और उन्हें कायरता का प्रतीक समझा गया है। इससे आगे बढ़ें तो पाते हैं कि हर प्रकार की स्त्री को 'विष की बूटी' यानि बहुत बुरी कहा गया है। यहाँ तक कि 'डायन भी सात घर छोड़ देती है' में अत्यधिक दुष्ट स्त्री जो अपनों के साथ भी बुरा करे, की 'डायन' से तुलना की है। तथाकथित रूप से स्त्रियों को अपनों की भी बुराइयाँ करने वाली, चुगलखोर साबित

करने के लिए 'दूती–दूती कहाँ चली...' जैसी लोकोक्तियों को निर्मित किया गया है। विचारणीय बात है कि इन लोकोक्तियों में किसी स्त्री में पाए गए छोटे दुर्गुण का बढ़ा–चढ़ाकर प्रयोग किया गया है जबकि पुरुषों के संदर्भ में ऐसे मुहावरे या लोकोक्तियाँ हमें नहीं मिलते हैं।

समय के विकास के साथ मानव ने प्रगति की है परंतु हम आज भी लकीर के फकीर की भांति उन्हीं रूढ़िवादी मुहावरों और लोकोक्तियों के माध्यम से अपनी भाषा की शोभा बढ़ाने में जुटे हैं जो कई आधार पर सामाजिक असमानता को बढ़ाने के भी कारण बनते हैं। समय के साथ हमारी सोच, हमारी भाषा, और हमारे समाज में परिवर्तन आता है। भाषा में कुछ अपरिवर्तनीय रह गया है, तो वह ये मुहावरे और लोकोक्तियाँ ही हैं। अब समय आ गया है कि हमें अपनी कहावतों में बेटी, पत्नी, वधू को एक सामान्य स्त्री की भूमिका में सशक्त दिखाना चाहिए क्योंकि आज की कहावतें भविष्य में भी चलती रहेंगी। आज भी अगर हमने इस और ध्यान न दिया तो हम स्त्री–पुरुष भेदभाव की संसति को चिरकाल तक परिपोषित करते रहेंगे। जोकि भावी पीढ़ियों के लिए कथनी और करनी में साम्य न होना के बराबर प्रतीत होगा। हमें आखिकार इस भेदभाव या असमानता को मुहावरों और लोकोक्तियों की दुनिया से बाहर निकालना ही होगा। वरना इन्हें कक्षा में पढ़ाना या बताना या समाज में इनका प्रयोग किसी भी कीमत पर स्वीकार्य न होगा। तो इसकी पहल आज से ही क्यों न हो?

परीक्षा प्रणाली के प्रति एक विचार

(डा. ज़ाकिर हुसैन रिपोर्ट से अनूदित)

डॉ. एरम खान*

हमारे देश में प्रचलित परीक्षा प्रणाली कई अवसरों पर शिक्षा के लिये अभिशाप साबित हुई है। परीक्षाओं को उनकी उपयोगिता के अनुपात में बहुत ज़्यादा महत्व दे कर शिक्षा व्यवस्था को और भी बदतर बना दिया गया है। विशेषज्ञों ने इस बारे में अपनी सहमति जताई है कि परीक्षाएं किसी विद्यार्थी के व्यक्तिगत काम या स्कूलों के कार्य का वैध या पूरा पैमाना नहीं हैं। कई अवसरों पर वे अपर्याप्त और अविश्वसनीय, मनमर्जी से चलने वाली और एकपक्षीय साबित हुई हैं।

परीक्षाओं का प्रयोजन सिद्ध हो सकता है यदि एक नियत क्षेत्र के स्कूलों के काम की शिक्षा बोर्ड के निरीक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के चुने हुए समूहों की उपलब्धियों के सैंपल मापन किये जाएं। इस तरह किए जाने वाले परीक्षण, पाठ्यक्रम के संशोधन के लिए जिम्मेदार विशेषज्ञों से परामर्श करके तैयार किए जाने चाहिए। परीक्षण पूरे पाठ्यक्रम को कवर करने के लिए पर्याप्त लंबे और ऐसे हों कि अंक देने की प्रक्रिया निष्पक्ष और पूर्वाग्रहों से मुक्त रहे। सैंपल परीक्षण द्वारा इस जांच को शामिल किया जाना स्कूल व्यवस्था की दक्षता को बहुत बढ़ा देगा। छात्र को अगली कक्षा में पदोन्नत करने का निर्णय पूरी तरह स्कूल के शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के काम की सावधानी से जांच के आधार पर किया जाए। पूरी स्कूल प्रणाली में दक्षता का वांछित स्तर बनाए रखने के लिए शिक्षा बोर्ड विभिन्न डिविजनों के स्कूलों की हर कक्षा के पाठ्यक्रम से विशिष्ट खंडों की वार्षिक परीक्षा आयोजित करे। जहाँ तक संभव हो, विद्यार्थियों से किसी ग्रेड या उसके महत्वपूर्ण हिस्से में किये गए कार्य को न दोहरवाया जाए। अगर किसी कक्षा में बहुत से बच्चे असफल होते हैं तो अध्यापक के काम पर निगाह रखने की जरुरत है। अगर किसी स्कूल में बहुत से बच्चे असफल होते हैं तो इसके प्रशासन की जांच हो, और अगर पूरी स्कूल प्रणाली में बहुत से बच्चे असफल होते हैं, तो इस का मतलब है कि पाठ्यक्रम और कई ग्रेडों के लिए निर्धारित मानदंडों में कुछ गड़बड़ है। इसे ठीक किया जाना चाहिए।

शिक्षा बोर्ड को स्कूलों की दक्षता ऊपर बताए गए सैंपल उपलब्धि परीक्षणों से, और आस–पास स्थित समुदाय के सामान्य जीवन के सुधार के लिए शिक्षकों और विद्यार्थियों के योगदान से जांचनी चाहिए। स्कूलों के काम की वार्षिक जिला–स्तर प्रदर्शनी भी उपलब्धि के निश्चित मानक बनाए

*सहायक प्राध्यापक, शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग, जामिइ

हिन्दुस्तान हमारा..... हिन्दुस्तान हमारा

फिरदौस अज़मत सिद्दीकी*

आओ बच्चों तुम्हें सुनाएँ तारीख़ हिन्दुस्तान की
इस ज़मीन पर जन्म लिया है बुद्ध और अशोक ने
ये ज़मीन है सत्य अहिंसा और कर्मा की
इस विरासत को आगे बढाया गाँधी के ख़्यालों ने
हिन्दुस्तान हमारा..... हिन्दुस्तान हमारा

इस भूमि को कर्म भूमि बनाया अकबर और नानक ने
यहीं पर पसीना बहाया नेहरू, पटेल और कलाम ने
यह देश है बोस और इंदिरा के फौलादी इरादों का
हिन्दुस्तान हमारा..... हिन्दुस्तान हमारा

ये देश है रज़िया और लक्ष्मीबाई के सपनों का
गूँज उठी जब तलवारें रानी और बेगम की
हिल गई सल्तनत–ए–ब्रितानियाँ उनकी हुंकार से
हिन्दुस्तान हमारा..... हिन्दुस्तान हमारा

क्या हिन्दू क्या मुसलमान, क्या सिक्ख और इसाई
यह देश है आर्य, शक, कुषान, हूण और पठानों का
यहाँ की हवा सिखाए सब हिन्दी भाई भाई हैं
हिन्दुस्तान हमारा..... हिन्दुस्तान हमारा

इस मिट्टी को बोसा लो ये मिट्टी है कुरबानियाँ की
यहीं पर जन्म लिया सुर, तुलसी, ख़ुसरो और कबीर ने
यहीं औलिया और चिश्ती ने अपनी मोहब्बत का पैग़ाम दिया
हिन्दुस्तान हमारा..... हिन्दुस्तान हमारा

ये हम सबके सपनों का भारत, हिन्दुस्तान है
इसे हम टूटने न देंगे, इसे हम बिखरने न देंगे
ये ज़मीं है सीता, सती–अनसुइया के बलिदानों की
हिन्दुस्तान हमारा..... हिन्दुस्तान हमारा

यह धरती है सब्र, मौहब्बतें और कुरबानियों की
यहीं पर ख़ून मिला है वीर हमीद और बिस्मिल का
ये ज़मीन है भगत और आज़ाद की शहादत का
हिन्दुस्तान हमारा..... हिन्दुस्तान हमारा

*सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र, जामिइ

दर्पण... एक आईना !

नाजनीन फातिमा*

दर्पण... एक आईना जिंदगी के कई रंग दिखाता है,
बात करना चाहो उससे तो बात करने लग जाता है।
हमें हमारी पहचान बताता है, दिखाता है,
कई होते हैं जो देखना ही नहीं चाहते,
सो आईना उनके लिए धुंधला हो जाता है।

दर्पण... एक आईना जिंदगी के कई रंग दिखाता है,
बात करना चाहो उससे तो बात करने लग जाता है।
मानव बड़ा ही स्वार्थी है,
वह भी अक्सर अलग अलग रंग दिखाता है,
पर आईना तो आईना है,
समझता है उसे और वही दोहराता है।

दर्पण... एक आईना जिंदगी के कई रंग दिखाता है,
बात करना चाहो उससे तो बात करने लग जाता है।
प्यार की भाषा भी समझता है,
और नफरत को भी जानता है,
एक वही तो है, जो हमें पूरी तरह पहचानता है।

दर्पण... एक आईना जिंदगी के कई रंग दिखाता है,
बात करना चाहो उससे तो बात करने लग जाता है।
खुशी हो या गम सभी साझा किए हैं उससे,
वही तो हमें पल–पल निहारता है।

दर्पण... एक आईना जिंदगी के कई रंग दिखाता है,
बात करना चाहो उससे तो बात करने लग जाता है।
संभाल कर रखना इसे, यह भी बुरा मान जाता है,
नहीं संभाला अगर इसे,
तो टूट कर बिखर बिखर जाता है।
वजूद यह भी रखता है, और बार–बार जताता है,
दरार पड़े तो चकनाचूर हो जाता है।
दर्पण... एक आईना..!

*प्रशिक्षक, टाई एंड डाई, शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग, जामिइ

जिंदा क़ौम

फिरदौस अज़मत सिद्दीकी*

क़ौम क्या है ..... कुछ इंसानों का हुजूम
उनका क्या किरदार है
जिंदा क़ौमें कभी शिकायतें नहीं करतीं
वह सामना करती हैं
हर मुश्किल का, हर हालात का,
वह खुद को संवारती है
संजोती है ..... बाँटती नहीं है
और आगे बढ़ती है
वह यक़ीन करती है
उठो, जागो और वढ़ो
और क़ौम बादशाहों से भी नहीं बनती
बल्कि वह बादशाह बनाती है
तो ऐ सोए हुए इंसानों उठो
अपनी कुव्वत को ज़ाहिर करो ..... तैयार हो जाओ
भूल जाओ तुम्हारे साथ क्या क्या हुआ
जिंदा क़ौम लकीरें नहीं पीटतीं
वह अपनी सरहदें ख़ुद तय करती हैं
भूल जाओ की कैसा तुम्हारा तसव्वुर बनाया गया
तुम्हें तलाक़ और हलाला में उलझाया गया
तुम्हें पहचान के सवालों मे घेरा गया
और एक तुम हो
कि जान लेने और देने को तैयार हो
कि हमें हमारी पहचान चाहिए
तुम भूल गए की तुम्हारे दीन का पासबान ख़ुदा है
भूल गए तू अपनी तारीख़ को
जब जजीरे से स्पेन तक परचम लहराते थे
भूल गए हो तुम तमाम आलिमों की सीख को
क्योंकि तुमने क़लम का साथ छोड़ दिया
तुमने जिहाद–ए अकबर का मायने बदल दिया
और जिहाद असगर की राह निकल पड़े
तुमने जिहालत को अपना रहबर बना लिया
तुम्हारी पहचान क़लम से नहीं, तलवार से बन गई
और तुम उसमें उलझ कर रह गए
भूल गए तुम ख़दीजा की राह–ए तिजारत को
भूल गए तुम आयशा की जंगी करामत को
क्योंकि तुमने औरत को अपनी आन–बान का मुद्दा बना लिया
भूल गए तुम इब्न–ए इस्ना, और इब्न–ए बतूता को
याद क्या करोगे तुम जुनैद व रूमी को
और जब भी तुम्हें क़ौम की याद आए
तो खो गए तारीख़ के सुनहरे ख़्वाबों मे
भूल गए कि तारीख का दरस है
क़ौमे रात के ख्वाबों से नहीं बनती
तारीख जीने के लिए होती है
तारीख़ वह है
जो आपको आपके कल से मुलाक़ात कराए
वह आपके मुस्तक़बिल की राहें तय करे
वह बताती है आपको क्या करना है
क्या नहीं करना है
क़ौमे ख्बाब से नहीं,
उनकी ताबीर उनके मांझी मे नहीं हो सकतीं
उन्हें जमाना–ए हाल मे ढूँढ़ना है
उन्हें अपना मुस्तक़बिल की नींव
आज के मुक़ाबलों पर डालनी है
क़ौमें सोकर नहीं बनतीं
क़ौमें रात की तारीकियों से भी नहीं बनती
क़ौम बनती है दिन के ख़्वाबों से
जैसे कलाम ने जिया उन ख्वाबों को
क़ौमें जज़्बातों से नहीं बनतीं
क़ौमें मजबूत इरादों से बनती हैं
क़ौमें बनती है दिन के जागते ख्वाबों मे
तो देर क्यों
उठो, और अपनी तक़दीर लिखना शुरू करो
मगर क़लम से
यही सच्ची क़ौम है
जैसे तुम्हारे बुज़ुर्गों ने बनाया
और तुमने वह रास्ता छोड़ दिया
तुम तलाक़ के हक़ के लिए लड़ते हो
तो समझो तुमने तरक्की का रास्ते को तलाक़ दिया
इस थकी हुई क़ौम का और क्या होगा
जिसने बाँट रखा है खुद को
आली और पाजी मे
जिसकी पहचान ही शिया और सुन्नी से
और तमाशा दिखाए वहाबी और बरेलवी का
वह क़ौम उम्मा का क्या दावा करे
लानत है ऐसे खोखले दावे पर
कि कर न सके एकजुट तुम अपने आपको

*सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र, जामिइ

मन का रावण

डॉ. शादमा यास्मीन*

दशहरे का त्यौहार आया। हम सब ने श्रद्धा के साथ नौ दिन तक उपवास रखे, पूजा की और सभी कर्मकांडों को हृदय से निभाया। दुर्गा माता को विसर्जित किया और अंत में रावण का दहन भी किया।

रावण... एक ऐसा व्यक्तित्व जो सबके हृदयों और नयनों को खटकता है। उसने सीता माता का हरण किया था, इसलिए वह चरित्रहीन भी कहा जाता है। लेकिन क्या वह सच में चरित्रहीन है? क्या उसने अपनी लंका में सीता मैया को स्पर्श करने का भी प्रयत्न किया या उनको कोई कष्ट दिया?नहीं, बिल्कुल नहीं! फिर हम सब रावण को बहुत दुष्ट और चरित्रहीन क्यों कहते हैं?

हवा के कण–कण में द्वेष, बदला, नफरत, और धर्म के नाम पर लड़ाई के बादल घिरे हुए हैं। इसलिए एक घुटन है, एक बेचैनी है और एक अनिश्चितता है। आज के दौर में प्रत्येक व्यक्ति अपने अंतर्मन में रावण को लिए घूम रहा है। कुछ का रावण उनके व्यवहार में दिखाई पड़ता है और कुछ अपने अंतर्मन के रावण को छुपा जाते हैं।

फिर तो हम कह सकते हैं कि रावण तुम तो महान थे क्योंकि तुमने सीता मैया को पवित्र भेजा। रावण का दहन करके हटते ही हम भूल जाते हैं कि हमने अपने अंदर के रावण को जीवित रखा हुआ है। क्या कभी हमने अपने अंदर के रावण का दहन करने का प्रयत्न किया...?

मनुष्य के भीतर के रावण को उकसाने के पीछे बहुत से कारण है। आज कुछ नौजवान और कुछ लोग समाज को आगे बढ़ने में व्यवधान उत्पन्न कर रहे हैं। नौजवान इसलिए भी व्यथित है कि उनके साथ न्याय नहीं हो रहा है। उनका भविष्य असुरक्षित है, उनमें नफरत भरी जा रही है, और उनको अपना रास्ता नहीं दिखाई दे रहा है कि वें क्या करें और किस ओर जाएं। जब सारे द्वार बंद नजर आते हैं, तब बुराई का द्वार उन्हें अपनी ओर आकर्षित करने लगता है। फिर एक असहाय व्यक्ति की तरह वें दलदल में फंसते चले जाते हैं। जो रावण नाम को जन्म देता है।

समाज के प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्तव्य होना चाहिए कि अपने अंदर के रावण को मारकर ऐसा व्यक्तित्व प्रदर्शित करें जो एक उन्नत एवं स्वच्छ समाज की रचना करे। जहां हर बेटी, बेटा, माँ, बाप, वृद्ध और नौजवान सुरक्षित रहें।

*प्रशिक्षक, आंतरिक सज्जा, शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग, जामिइ

- भरोसा बनाए रखो कि तुम्हें भाषा पर सचमुच भरोसा है और हाँ, इसकी कोई समय–सीमा नहीं। – सिद्धेश्वर सिंह
- भाषा का होना कविता के होने की गारंटी है। – केदारनाथ सिंह
- कविता भाषा का भाषा में स्वराज है। – अशोक वाजपेयी
- अगर राजनीति के बाहर भी स्वतंत्रता के कोई मतलब हैं तो हमें उसको एक ऐसी भाषा में भी खोजना, और दृढ़ करना होगा जो राजनीति की भाषा नहीं है। –कुँवर नारायण
- एक सरल वाक्य बचाना मेरा उद्देश्य है। – मंगलेश डबराल
- भाषा स्मृतियों का पुंज है और विलक्षण यह है कि स्मृतियाँ पुरानी और एकदम ताजा भाषा में घुली–मिली होती हैं। – केदारनाथ सिंह
- भाषा का बहुस्तरीय होना उसकी जागरूकता की निशानी है। –कुँवर नारायण
- मुझे पाने दो पहले ऐसी बोली जिसके दो अर्थ न हों। – रघुवीर सहाय
- जो नहीं हैं, मैं उनकी जगह लेना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ, वे मेरे मुँह से बोलें। – मंगलेश डबराल
- बाजार चाहे भी तो भाषा के बिना जिंदा नहीं रह सकता जबकि भाषा की प्रति में वह अंतर्निहित शक्ति होती है कि वह बाजार के साथ भी जिंदा रहे और बाजार के बिना भी जिंदा रह सके। – केदारनाथ सिंह
- दुनिया की कोई भाषा नहीं जो पृथक व्यक्तियों के निगूढ़तम मर्म के बीच वास्तविक सेतु का काम कर सके। – धर्मवीर भारती

राजभाषा अधिनियम, 1963
यथासंशोधित, 1967

(1963 का अधिनियम संख्यांक 19)

उन भाषाओं का, जो संघ के राजकीय प्रयोजनों, संसद में कार्य के संव्यवहार, केन्द्रीय और राज्य अधिनियमों और उच्च न्यायालयों में कतिपय प्रयोजनों के लिए प्रयोग में लाई जा सकेंगी, उपबन्ध करने के लिए अधिनियम । भारत गणराज्य के चौदहवें वर्ष में संसद द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित होः–

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ

1. यह अधिनियम राजभाषा अधिनियम, 1963 कहा जा सकेगा।

2. धारा 3, जनवरी, 1965 के 26 वें दिन को प्रवृत्त होगी और इस अधिनियम के शेष उपबन्ध उस तारीख को प्रवृत्त होंगे जिसे केन्द्रीय सरकार,शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा नियत करे और इस अधिनियम के विभिन्न उपबन्धों के लिए विभिन्न तारीखें नियत की जा सकेंगी।

2. परिभाषाएं––इस अधिनियम में जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,

क. 'नियत दिन' से, धारा 3 के सम्बन्ध में, जनवरी, 1965 का 26वां दिन अभिप्रेत है और इस अधिनियम के किसी अन्य उपबन्ध के सम्बन्ध में वह दिन अभिप्रेत है जिस दिन को वह उपबन्ध प्रवृत्त होता है,

ख. 'हिन्दी' से वह हिन्दी अभिप्रेत है जिसकी लिपि देवनागरी है।

3. संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए और संसद में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा का रहना–

1. संविधान के प्रारम्भ से पन्द्रह वर्ष की कालावधि की समाप्ति हो जाने पर भी, हिन्दी के अतिरिक्त अंग्रेजी भाषा, नियत दिन से ही,

क. संघ के उन सब राजकीय प्रयोजनों के लिए जिनके लिए वह उस दिन से ठीक पहले प्रयोग में लाई जाती थी; तथा

ख. संसद में कार्य के संव्यवहार के लिए प्रयोग में लाई जाती रह सकेगी :

परंतु संघ और किसी ऐसे राज्य के बीच, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, पत्रादि के प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा प्रयोग में लाई जाएगीः

परन्तु यह और कि जहां किसी ऐसे राज्य के, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में अपनाया है और किसी अन्य राज्य के, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, बीच पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी को प्रयोग में लाया जाता है, वहां हिन्दी में ऐसे पत्रादि के साथ–साथ उसका अनुवाद अंग्रेजी भाषा में भेजा जाएगा :

परन्तु यह और भी कि इस उपधारा की किसी भी बात का यह अर्थ नहीं लगाया जाएगा कि वह किसी ऐसे राज्य को, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, संघ के साथ या किसी ऐसे राज्य के साथ, जिसने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में अपनाया है, या किसी अन्य राज्य के साथ, उसकी सहमति से, पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी को प्रयोग में लाने से निवारित करती है, और ऐसे किसी मामले में उस राज्य के साथ पत्रादि के प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग बाध्यकर न होगा।

2. उपधारा (1) में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी, जहां पत्रादि के प्रयोजनों के लिए हिन्दी या अंग्रेजी भाषा–

i. केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के और दूसरे मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के बीच;

ii. केन्द्रीय सरकार के एक मंत्रालय या विभाग या कार्यालय के और केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या

---

*साभारः राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार वेबसाइट

नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी या उसके किसी कार्यालय के बीच;

iii. केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी या उसके किसी कार्यालय के और किसी अन्य ऐसे निगम या कम्पनी या कार्यालय के बीच;

प्रयोग में लाई जाती है वहां उस तारीख तक, जब तक पूर्वोक्त संबंधित मंत्रालय, विभाग, कार्यालय या विभाग या कम्पनी का कर्मचारीवृद हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त नहीं कर लेता, ऐसे पत्रादि का अनुवाद, यथास्थिति, अंग्रेजी भाषा या हिन्दी में भी दिया जाएगा।

3. उपधारा (1)में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी हिन्दी और अंग्रेजी भाषा दोनों ही–

i. संकल्पों, साधारण आदेशों, नियमों, अधिसूचनाओं, प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदनों या प्रेस विज्ञप्तियों के लिए, जो केन्द्रीय सरकार द्वारा या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी द्वारा या ऐसे निगम या कम्पनी के किसी कार्यालय द्वारा निकाले जाते हैं या किए जाते हैं;

ii. संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे गए प्रशासनिक तथा अन्य प्रतिवेदनों और राजकीय कागज–पत्रों के लिए;

iii. केन्द्रीय सरकार या उसके किसी मंत्रालय, विभाग या कार्यालय द्वारा या उसकी ओर से या केन्द्रीय सरकार के स्वामित्व में के या नियंत्रण में के किसी निगम या कम्पनी द्वारा या ऐसे निगम या कम्पनी के किसी कार्यालय द्वारा निष्पादित संविदाओं और करारों के लिए तथा निकाली गई अनुज्ञप्त्यिों,अनुज्ञापत्रों, सूचनाओं और निविदा–प्ररूपों के लिए, प्रयोग में लाई जाएगी।

5. **उपधारा (1)या उपधारा (2) या उपधारा (3)** के उपबन्धों पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना यह है कि केन्द्रीय सरकार धारा 8 के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा उस भाषा या उन भाषाओं का उपबन्ध कर सकेगी जिसे या जिन्हें संघ के राजकीय प्रयोजन के लिए, जिसके अन्तर्गत किसी मंत्रालय,विभाग, अनुभाग या कार्यालय का कार्यकरण है, प्रयोग में लाया जाना है और ऐसे नियम बनाने में राजकीय कार्य के शीघ्रता और दक्षता के साथ निपटारे का तथा जन साधारण के हितों का सम्यक ध्यान रखा जाएगा और इस प्रकार बनाए गए नियम विशिष्टतया यह सुनिश्चित करेंगे कि जो व्यक्ति संघ के कार्यकलाप के सम्बन्ध में सेवा कर रहे हैं और जो या तो हिन्दी में या अंग्रेजी भाषा में प्रवीण हैं वे प्रभावी रूप से अपना काम कर सकें और यह भी कि केवल इस आधार पर कि वे दोनों ही भाषाओं में प्रवीण नहीं है उनका कोई अहित नहीं होता है।

5. **उपधारा (1)के खंड (क) के उपबन्ध और उपधारा (2),** उपधारा (3) और उपधारा (4), के उपबन्ध तब तक प्रवृत्त बने रहेंगे जब तक उनमें वर्णित प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी भाषा का प्रयोग समाप्त कर देने के लिए ऐसे सभी राज्यों के विधान मण्डलों द्वारा, जिन्होंने हिन्दी को अपनी राजभाषा के रूप में नहीं अपनाया है, संकल्प पारित नहीं कर दिए जाते और जब तक पूर्वोक्त संकल्पों पर विचार कर लेने के पश्चात् ऐसी समाप्ति के लिए संसद के हर एक सदन द्वारा संकल्प पारित नहीं कर दिया जाता।

4. राजभाषा के सम्बन्ध में समिति –

1. जिस तारीख को धारा 3 प्रवृत्त होती है उससे दस वर्ष की समाप्ति के पश्चात, राजभाषा के सम्बन्ध में एक समिति, इस विषय का संकल्प संसद के किसी भी सदन में राष्ट्रपति की पूर्व मंजूरी से प्रस्तावित और दोनों सदनों द्वारा पारित किए जाने पर, गठित की जाएगी।

2. इस समिति में तीस सदस्य होंगे जिनमें से बीस लोक सभा के सदस्य होंगे तथा दस राज्य सभा के सदस्य होंगे, जो क्रमशः लोक सभा के सदस्यों तथा राज्य सभा के सदस्यों द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्धति के अनुसार एकल संक्रमणीय मत द्वारा निर्वाचित होंगे।

3. इस समिति का कर्तव्य होगा कि वह संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिए हिन्दी के प्रयोग में की गई प्रगति का पुनर्विलोकन करें और उस पर सिफारिशें करते हुए राष्ट्रपति को प्रतिवेदन करें और राष्ट्रपति उस प्रतिवेदन को संसद् के हर एक सदन के समक्ष रखवाएगा और सभी राज्य सरकारों को भिजवाएगा ।

4. राष्ट्रपति उपधारा (3) में निर्दिष्ट प्रतिवेदन पर और उस पर राज्य सरकारों ने यदि कोई मत अभिव्यक्त किए हों तो उन पर विचार करने के पश्चात उस समस्त

प्रतिवेदन के या उसके किसी भाग के अनुसार निदेश निकाल सकेगा :

परन्तु इस प्रकार निकाले गए निदेश धारा 3 के उपबन्धों से असंगत नहीं होंगे ।

4. केन्द्रीय अधिनियमों आदि का प्राधित हिन्दी अनुवाद–

1. नियत दिन को और उसके पश्चात शासकीय राजपत्र में राष्ट्रपति के प्राधिकार से प्रकाशित–

क. किसी केन्द्रीय अधिनियम का या राष्ट्रपति द्वारा प्रख्यापित किसी अध्यादेश का, अथवा

ख. संविधान के अधीन या किसी केन्द्रीय अधिनियम के अधीन निकाले गए किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि का हिन्दी में अनुवाद उसका हिन्दी में प्राधित पाठ समझा जाएगा ।

2. **नियत दिन से ही उन सब विधेयकों के, जो संसद** के किसी भी सदन में पुरःस्थापित किए जाने हों और उन सब संशोधनों के, जो उनके समबन्ध में संसद के किसी भी सदन में प्रस्तावित किए जाने हों, अंग्रेजी भाषा के प्राधित पाठ के साथ–साथ उनका हिन्दी में अनुवाद भी होगा जो ऐसी रीति से प्राधित किया जाएगा, जो इस अधिनियम के अधीन बनाए गए नियमों द्वारा विहित की जाए।

6. कतिपय दशाओं में राज्य अधिनियमों का प्राधित हिन्दी अनुवाद–

जहां किसी राज्य के विधानमण्डल ने उस राज्य के विधानमण्डल द्वारा पारित अधिनियमों में अथवा उस राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित अध्यादेशों में प्रयोग के लिए हिन्दी से भिन्न कोई भाषा विहित की है वहां, संविधान के अनुच्छेद 348 के खण्ड (3) द्वारा अपेक्षित अंग्रेजी भाषा में उसके अनुवाद के अतिरिक्त, उसका हिन्दी में अनुवाद उस राज्य के शासकीय राजपत्र में, उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से, नियत दिन को या उसके पश्चात प्रकाशित किया जा सकेगा और ऐसी दशा में ऐसे किसी अधिनियम या अध्यादेश का हिन्दी में अनुवाद हिन्दी भाषा में उसका प्राधित पाठ समझा जाएगा।

7. उच्च न्यायालयों के निर्णयों आदि में हिन्दी या अन्य राजभाषा का वैकल्पिक प्रयोग–

नियत दिन से ही या तत्पश्चात किसी भी दिन से किसी राज्य का राज्यपाल, राष्ट्रपति की पूर्व सम्मति से, अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिन्दी या उस राज्य की राजभाषा का प्रयोग, उस राज्य के उच्च न्यायालय द्वारा पारित या दिए गए किसी निर्णय, डिक्री या आदेश के प्रयोजनों के लिए प्राधित कर सकेगा और जहां कोई निर्णय, डिक्री या आदेश (अंग्रेजी भाषा से भिन्न) ऐसी किसी भाषा में पारित किया या दिया जाता है वहां उसके साथ–साथ उच्च न्यायालय के प्राधिकार से निकाला गया अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद भी होगा।

8. नियम बनाने की शक्ति –

1. केन्द्रीय सरकार इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिए नियम, शासकीय राजपत्र में अधिसूचना द्वारा, बना सकेगी ।

2. इस धारा के अधीन बनाया गया हर नियम, बनाए जाने के पश्चात् यथाशीघ्र, संसद के हर एक सदन के समक्ष, जब वह सत्र में हो, कुल तीस दिन की अवधि के लिए रखा जाएगा। वह अवधि एक सत्र में, अथवा दो या अधिक आनुक्रमिक सत्रों में पूरी हो सकेगी । यदि उस सत्र के या पूर्वोक्त आनुक्रममिक सत्रों के ठीक बाद के सत्र के अवसान के पूर्व दोनों सदन उस नियम में कोई परिवर्तन करने के लिए सहमत हो जाएं तो तत्पश्चात वह ऐसे परिवर्तित रुप में ही प्रभावी होगा । यदि उक्त अवसान के पूर्व दोनों सदन सहमत हो जाएं कि वह नियम नहीं बनाया जाना चाहिए तो तत्पश्चात यह निस्प्रभाव हो जाएगा । किन्तु नियम के ऐसे परिवर्तित या निस्प्रभाव होने से उसके अधीन पहले की गई किसी बात की विधिमान्यता पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा ।

9. कतिपय उपबन्धों का जम्मू–कश्मीर को लागू न होना–

धारा 6 और धारा 7 के उपबन्ध जम्मू–कश्मीर राज्य को लागू न होंगे।

मनहूस बिटिया

फिरदौस अज़मत सिद्दीकी*

पास की मस्जिद से सुबह की अज़ान की आवाज़ आई अल्लाह हु अकबर...अल्लाह हु अकबर....तभी एक नवजात बच्चे के केहाँ–केहाँ की आवाज से सभी का चेहरा खिल गया.....हर कोई दरवाजे की तरफ लपका क्या हुआ....दाई ने बाहर आकर इत्तेला दिया

लड़की हुई....लड़की....

सभी का चेहरा खुशी से चमक गया.....अरे लड़की हुई..... लड़की.....कोई बोला अब्बा मियाँ को यह मुबारक ख़बर दो... ..सारे घर मे खुशी का आलम था.....मानो घर मे किसी फ़रिश्ते की आमद हुई हो.....और अब्बा मियाँ ने हब्बे मामूल बिना वक्त गँवाए अपनी डायरी खोली और पैदाइश का वक्त और दिन नोट किया....ख़ानदान के रिवाज के हिसाब से बच्ची का नाम, विलादत के वक्त मौजूद रिश्तेदारों का नाम और विलादत को अंजाम दिलाने वाली दाई का नाम भी मौजूद....मानो 23 मार्च का दिन कोई कौमी अवाम का दिन होने जा रहा हो.....पूरे घर मे खुशियाँ और औरतों के रिवाज के हिसाब से रोज रात मे गाना बजाना भी होता... और सनीचर के दिन घर में बहुत चहल–पहल क्येंकि आज बिटिया की छठी थी.....शाम को सारा ख़ानदान इकट्ठा हुआ.. ..बहुत सारे सोअर के गानों के बाद नाइन एक थाल सूप लेकर तैयार थी जिसमे सबको नेछुर डालना था... अब्बा मियाँ सैय्यद इंतेख़ाब अली काफी खुश थे कि उनकी छः बेटियों के बाद सातवीं बेटी की शक्ल मे उनकी नवासी पैदा दुई थी....खूब ढ़ेर सारे कपड़े और सामान बच्ची के लिए आया..... बच्ची के पैदाइश की खबर सुल्ताना के ससुराल भी पहुँचा दी गई....वहाँ भी सब खुश थे...ढेर सारे सामान के साथ सुल्ताना के जेठ ग्यास फौरन अहमदपुर के लिए रवाना हो गए अहमदपुर से सुल्ताना के ससुराल मखदूमपुर की दूरी महज 10 किमी. की थी..... और सबकी मर्जी से तय हुआ कि बिटिया का नाम इक़रा होगा.....धीरे–धीरे करके 40 दिन गुजर गए और बड़ी धूम से सवा महीने की रस्म अदायगी हुई....और अब सुल्ताना और इक़रा को उनके ददिहाल भेजने की तैयारियाँ भी शुरू हो गईं.....

बड़ी दादी (सुल्ताना की दादी) आमिना ने कहा

दुल्हन अब सुल्ताना को पैर फेरने के लिए उसके ससुराल जल्दी भिजवा दो....

दूसरी तरफ....इक़रा की दादी भी उतनी बेचैन थीं अपनी पोती को देखने के लिए

अभी यह खुशियों का दौर चल ही रहा था कि अचानक तीस अप्रैल को उस ख़ानदान मे एक हादसा हो जाता जिसने दोनों ख़ानदान को हिला दिया....इक़रा के ताया जिनकी उम्र अभी सिर्फ 27 साल की थी अभी उनकी शादी को महज पाँच साल हुए थे कि उनका गाड़ी का एक्सीडेंट हो जाता है जिससे वह अपनी भावज सुल्ताना को लेने के लिए अहमदपुर आ रहे थे.....

अहमदपुर मे ख़बर आई कि ग्यास अब नही रहे। मानों पूरे घर पर मातम तारी हो गया कि अभी हफ्तों पहले ही तो आए थे और भतीजी का नाम इक़रा रखने के लिए कितने बज़िद थे कि अब्बा मियाँ को कहना पड़ा, ठीक है तुम इक़रा रखो और मैं जहाँआरा.....

दूसरी तरफ शेख़ इकराम के घर मे मातम थाँ जवान बेटा खत्म हो गया...इक़रा अपने घर पहुँची तो मगर मय्यत के माहौल मे.....किसी को उसकी तरफ देखने की भी फुरसत नहीं.....

अचानक यह सेलीब्रेटेड बच्ची कब मनहूस बन गई खुद उसे भी पता न था...

दादी खुर्शीद को होश आता तो मेरा बच्चा, मेरा लख़्ते जिगर कहाँ गया....कह के फिर बेहोश हो जातीं.....खुद सुल्ताना को भी ग्यास भाई के जाने का इतना सदमा कि बच्ची के बारे मे होश नहीं.....

हफ्ता महीना गुजर गए। खुर्शीद बेगम को तो होश आने लगा मगर शायद वह सुल्ताना और इक़रा की शक्ल देखना भी पसंद नही करना चाहती थीं.....वह इस बात को भूल नहीं पा रही थीं कि अभी तो सुल्ताना की शादी को एक साल मई

*सहायक प्रोफ़ेसर, सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र, जामिइ

के महीने मे होना था और यह हादसा हो गया....बेटी पैदा हुई....वह भी मनहूस...कि सवा महीना भी न होने पाया और ताया को खा लिया.....

दूसरी तरफ ग्यास की बीवी जिसकी शादी को पाँच साल हो गए और अभी छ महीने की हामला थीं....उम्र सिर्फ 23–24 साल उसका रो रो कर बुरा हाल था....तक़रीबन दो तीन महीने के बाद इस घर मे खुशी आई क्योंकि मरहूम ग्यास के बेटे की विलादत हुई। खुर्शीद बेगम ने इस बच्चे मे अपने मरहूम बेटे को ढूँढ़ लिया उनका गम भी थोड़ा हलका हो गया।...लेकिन शेख़ इकराम के घर से मातमी माहौल नही गया। कोई त्योहार नहीं....कोई मौका नही जब खुर्शीद बेगम अपने बेटे को याद करके न रोएँ। धीरे–धीरे इक़रा की तरफ से गुस्सा तो कम हो गया पर बहू को कभी माफ नही कर पाई कि उसकी शादी के साल भर के अंदर उनके घर इतना बड़ा हादसा हो गया....छोटी–छोटी बातों पर उसे तंज करतीं और ताने देती....सुल्ताना भी रोज–राज के तंज से तंग आ चुकी थी।

वक्त पंख लगाकर उड़ रहा था धीरे–2 बच्ची की उम्र एक साल की हो गई, सुल्ताना ने महसूस किया कि उसकी और उसकी बच्ची की इस घर मे कोई क़दर नही सिर्फ इसलिए की उनकी बेटी की पैदाइश के बाद इस घर का जवान बेटा अल्लाह को प्यारा हो गया। सुल्ताना ने तय कर लिया कि अब वह इस घर मे हरगिज नही रहेंगी...जिस घर मे उनकी बेटी और उसको मनहूस समझा जाता हो। वहाँ वह हरगिज़ नही रुकेंगी.....

मातम का माहौल कम होने के बाद सुल्ताना ने अपनी सास से कहा...अम्मी घर मे बैठे बोरियत होती है क्यों न मै कोई नौकरी कर लूँ....सास ने भी इजाज़त दे दी शायद वह इन मनहूस चेहरों से छुटकारा चाहती थीं....कहा हाँ जाओ आखिर यह पढ़ाई–लिखाई किस दिन काम आएगी.... सुल्ताना ने अपना सामान पैक किया और अपने मायके अहमदपुर आ गई। कई स्कूलों मे अर्जी डाली....आख़िर ख़दीजतुन कुबरा स्कूल से बुलावा आ गया....इंटरव्यू हुआ.... और सुल्ताना ने बतौर असिस्टेंट टीचर वहाँ अपनी मुलाज़मत शुरू कर दी....तन्हा अकेली बच्ची को भी देखना और स्कूल जाना....शौहर ने सारा तरके–ताल्लुक ख़त्म कर लिया कि मेरे मना करने के बावजूद कैसे घर से क़दम निकाला....सुल्ताना का दिन तो पता न लगता स्कूल और बच्ची मे वक्त गुजर जाता, रात होती तो एहसास होता–या अल्लाह मै यह किस नई मुसीबत मे मुब्तिला हो गई... नौकरी न करते तो क्या होता। उस बीहड़ गाँव मे दिन–रात सास के ताने सुनती। कभी खाने मे नमक कम होने का, कभी तेज़ होने के लिए, कभी बदसलीक़ा और फूहड़ होने के लिए और शौहर की बदसलूकी अलग, कि घर वालों के साथ मोहब्बत से पेश न आने का इल्ज़ाम ऊपर से।

बच्ची का भी कोई मुस्तक़बिल नही...सिवाय मनहूस के लक़ब के.....दिन गुजरता गया....इक़रा का भी वहीं ख़दीजतुल कुबरा मे दाखिला हो गया.....बच्ची रोज माँ से कहती– अम्मा सबके अब्बू आते हैं मेरे क्यों नहीं....माँ के पास कोई जवाब न होता सिवाय इसके कि आएँगे बेटा एक दिन आँएगे, अब्बा दुबई गए हैं, ढ़ेर सा पैसा लेकर आएँगे ताकि अपनी बिटिया को खूब पढ़ाकर क़ाबिल बना सकें.....और नन्ही इक़रा का एक दिन यह भ्रम भी टूट गया....जब पोस्टमैंन ने एक दिन लिफाफा पकड़ाया....लिफाफे पर पता देखा तो मख़दूमपुर से था....धड़कते दिल से सुल्ताना ने लिफाफा खोला....ख़त की तहरीर पढ़कर सुल्ताना के पैर के नीचे से जमीन निकल गई। यह ज़ामिन अहमद की तरफ से तलाक़नामा था.....सुल्ताना ने भी भरी आँखों से तलाक़नामे पर दस्तखत कर दिया.....और सारे मंजर उसकी आँखों के सामने गुजर गया। किस तरह खुर्शीद बेगम ने ज़िद कर रखी थी कि इस मनहूस का साया भी मेरे सामने न आया करे...और किस तरह मजबूर होकर उसे घर छोड़ना पड़ा.... शौहर की नजर मे नाफ़रमान बीवी साबित होना पड़ा....सारी रात सोचती रही शायद उसने मख़दूमपुर न छोड़ा होता तो आज यह दिन न आते....ताना और तशद्दुद ही सही, कम से कम निकाही होने का तो भ्रम था आज वह भी टूट गया.... खुर्शीद बेगम तो जीत गईं पर आखिर मे हार किसकी इकरा की या सुल्ताना की, शायद किसी की नही....अब कम से कम किसी का इंतज़ार तो नही रहेगा....

प्यार बाँटते चलो

डॉ. अन्दलीब*

सड़क पर आने जाने वाली गाड़ियों पर नजर टिकाये मैं पीली नंबर प्लेट वाली उबर टैक्सी की प्रतीक्षा में थी। सभी लोग जल्दी में नजर आ रहे थे। किसी को ऑफिस जाने की जल्दी थी, तो किसी को कॉलेज पहुँचने की। कोई सड़क पार कर रहा था तो कोई दुकान खोल रहा था। मैं स्वयं समय पर विश्वविद्यालय पहुँचने की जल्दी में थी। इतने में मुझे टैक्सी सामने से आती हुई नजर आई।

आज भी मैं प्रतिदिन की भाँति घर से विश्वविद्यालय जाने के लिए टैक्सी में बैठ गई। गाड़ी आगे बढ़ी ही थी कि सामने सड़क पर सामान से लदा एक ठेला नजर आया जो गाड़ी के रास्ते में बाधा बन गया। मेरी अपेक्षा के विपरीत टैक्सी चालक ने न कोई हॉर्न बजाया, न ठेले के मालिक का इंतजार देखा बल्कि स्वयं गाड़ी से बाहर निकलकर ठेले को किनारे लगा दिया। मुझे लगा कि इतना धैर्यपूर्ण कार्य करने वाले उस टैक्सी चालक का नाम 'विकास' नहीं, 'धीरज' होना चाहिए था। 'ख़ैर! मुझे इस बात से क्या मतलब', मैंने अपने विचार को झटका।

टैक्सी चालक ने गाड़ी थोड़ी और आगे बढ़ाई तो कुछ ही दूरी पर सड़क के बायीं ओर जनरल स्टोर के बाहर मैंने झुके कंधों वाले एक वृद्ध व्यक्ति को बेचैनी से खड़ा देखा। वह किसी आशा के साथ गाड़ी के निकट आया और गाड़ी रोकने का इशारा किया। टैक्सी चालक ने गाड़ी रोककर पूछा, ''क्या हुआ बाबा जी?'' उस बुजुर्ग व्यक्ति ने एक आस से पूछा, ''क्या मुझे कालिंदी कुंज पर छोड़ सकते हो?'' टैक्सी चालक ने मुझसे अनुमति चाही, ''मैडम! आपको कोई परेशानी तो नहीं होगी?'' मैंने भी इस विचार के साथ कि यह वृद्ध व्यक्ति आसानी से अपने गंतव्य तक पहुँच जाए, कहा, ''नहीं, मुझे कोई समस्या नहीं। '' उस बुजुर्ग के गाड़ी में बैठ जाने पर टैक्सी चालक ने अनुरोध किया, ''बाबाजी सीट बेल्ट लगा लीजिए। '' पर सीधे–सादे बाबाजी भला कहाँ जानते थे कि गाड़ी की सीट पर बैठकर कोई बेल्ट भी लगाई जाती है। उन्होंने अनभिज्ञता दर्शाते हुए टैक्सी चालक की ओर देखा। टैक्सी चालक ने गाड़ी की स्पीड कम करके बड़े अपनेपन से उन बूढ़े बाबा की सीट बेल्ट बांधने में मदद की और बताया, ''बाबाजी! बेल्ट ऐसे बाँधते हैं। ''बाबाजी शुक्र के भाव से थोड़ा मुस्कुराए।

कुछ दूर ख़ामोश यात्रा के पश्चात टैक्सी चालक ने चुप्पी तोड़ते हुए पूछा, ''बाबाजी आप कहाँ के रहने वाले हैं?'' बाबाजी ने अपने सादा से लहजे में जवाब दिया, ''वैसे तो मैं यू. पी. का रहने वाला हूँ... यहाँ दिल्ली में अपने बेटे के साथ रहता था। '' सरसरी सा सुनते हुए टैक्सी चालक ने पूछा, ''अब नहीं रहता आपका बेटा यहाँ?'' बाबाजी ने एक लंबी साँस खींची, ''आह! क्या बताऊँ बस!'' यूँ लगा जैसे किसी ने उनके जख़्म कुरेद दिये हों। मुरझाए चेहरे के साथ वह बोले, ''मेरा बीस साल का इकलौता बेटा था... आज उसे मरे हुए एक साल हो गया है। एक सड़क हादसे में उसकी जान चली गई। '' बाबाजी की जैसे कोई दुःखद याद हरी हो गई। ''भगवान उसकी आत्मा को शांति दे!'' टैक्सी चालक ने उनके मृतक पुत्र के लिए प्रार्थना की। दुःखी मन से वह आगे बोले, ''बहुत अच्छा बच्चा था बेचारा! कोई बुरी आदत नहीं थी उसमें। अपने काम से काम रखता था... काम से सीधे घर आता था। हाँ! शाम में स्कूल भी जाता था।'' वह अपने मृतक पुत्र के गुणों को याद करने लगे, ''उसके जैसा अच्छा बच्चा होना तो मुश्किल ही है। उसके जनाजे में भी स्कूल के कम से कम सौ बच्चे थे। सब उसकी तारीफ करते नहीं थकते थे।'' बाबाजी की बुढ़ापे के बोझ से झुकी आँखों के किनारों पर पानी चमकने लगा। उनकी आंखों का तारा उनसे जुदा जो हो गया था।

धीमी गति से गाड़ी आगे बढ़ाते हुए उनकी बातों को ध्यान से सुनते हुए टैक्सी चालक ने बाबाजी को ढांढस बंधाया, ''बाबाजी जाने वाला तो चला गया, अब आपकी जितनी बची–खुची ज़िंदगी है उसे हँसी–खुशी बिताइए।'' यह सुनकर बाबाजी की आँखें और अधिक अश्रुपूरित हो गईं, ''जाने की उमर तो मेरी थी चला वह गया... अल्लाह उसकी जगह मुझे ही बुला लेता।'' आँसू की कुछ बूंदे मोतियों की अनमोल लड़ी की भाँति उनकी आँखों से झर गईं। कुछ क्षण मौन रहने के पश्चात, टैक्सी चालक ने गाड़ी की गति को थोड़ा बढ़ाते हुए दृढ़ लहजे में बाबाजी को

*अतिथि संकाय, शिक्षक प्रशिक्षण एवं अनौपचारिक शिक्षा विभाग, जामिइ

सांत्वना दी, ''बाबाजी यहाँ हम सब मरने के लिए ही आए हैं. .. बस किसी को बाद में जाना है, किसी को पहले। क्या पता किसका समय कब समाप्त हो जाए। मौत का उम्र से कोई संबंध नहीं। '' ठीक ही तो कह रहा था वह! मौत का उम्र से कोई सम्बंध नहीं। यह बात हम सब जानते हैं परंतु इस परिस्थिति में टैक्सी चालक की यह बात मेरे दिल पर गहरा असर छोड़ गई। मुझे नवाज देवबंदी का यह शेर याद आ गया –

''बाप और बेटा पहले आयें तो फिर पोता आता है,
आने की तरतीब है लेकिन जाने की तरतीब नहीं।''

टैक्सी चालक ने बाबाजी को और हिम्मत दिलाई, ''आप खुद को अकेला क्यों समझ रहे हैं। कहते हैं न जिसका कोई नहीं होता उसका भगवान होता है। आप तो बुढ़ापे में रो रहे हैं... मैं खुद इस उम्र में भी रोज आँसू बहाता हूँ। यही जीवन है।'' उस व्यक्ति के दुःखों का कारण भले ही मुझे न ज्ञात हो, परन्तु हममें से प्रत्येक व्यक्ति अपने स्तर पर किसी न किसी समस्या से जूझ रहा है या किसी न किसी चिंता से ग्रस्त है। वास्तव में यही तो जीवन है। टैक्सी चालक की बातों से बाबाजी के आँसुओं की बूँदें अश्रुधारा में परिवर्तित हो गईं। उनकी दुखियारी आंखों से पानी थम नहीं पा रहा था। टैक्सी चालक ने पुनः दृढ़ और उच्च स्वर में बड़े ही अपनेपन के साथ बाबाजी के बूढ़े हाथ पर अपना हाथ रखा, ''बाबाजी आप रो क्यों रहे हैं?आपका एक बेटा चला गया तो क्या हुआ?मैं आपका बेटा नहीं हूँ क्या?समझिए आपके बगल में मैं आप ही का बेटा बैठा हूँ और आप मेरे बाबा हैं।'' स्नेह का यह श्य देखकर मेरा हृदय द्रवित हो उठा। मुझे लगा कि हम सब यदि सांत्वना, सहानुभूति, समानुभूति, स्नेह, प्रेम तथा अपनत्व की भावना से ओत–प्रोत हो जाएं तो यही संसार स्वर्ग बन जाए। भारी मन और भीगे नेत्रों के साथ बाबाजी ने उस टैक्सी चालक के सर पर अपने झुर्रियों भरे हाथ रखकर आशीर्वाद दिया और आँसुओं को पीछे धकेलने का प्रयास करने लगे।

इतने में बाबाजी का गंतव्य स्थल आ गया। बाबाजी ने स्वयं को संभाला और टैक्सी चालक को दुआ देते हुए विदा ली, ''अल्लाह तुम्हारा भला करे और तुम्हें हमेशा खुश रखे!'' इसी बीच मैंने उनकी आँखों में झांका तो उनकी आँखों में क्या नहीं था – एक बेचैनी, एक सूनापन, एक फिक्र और इन सबके बीच में एक सादगी, एक ठहराव और एक विश्वास। वह विश्वास जो शायद उन्हें विकास की बातों से मिला था। यह विश्वास कि दुनिया अभी अच्छे लोगों से खाली नहीं, यह विश्वास कि अपनापन होने के लिए अपना होना जरूरी नहीं, और यह विश्वास कि अपनेपन के बीच में धर्म की आड़ हो यह जरूरी नहीं। निःस्वार्थ प्रेम के इन पलों को देखकर मेरा हृदय भाव–विभोर हो गया।

गोपालदास नीरज

है बहुत अंधियार अब सूरज निकलना चाहिए
जिस तरह से भी हो ये मौसम बदलना चाहिए

रोज़ जो चेहरे बदलते है लिबासों की तरह
अब जनाज़ा ज़ोर से उनका निकलना चाहिए

अब भी कुछ लोगो ने बेची है न अपनी आत्मा
ये पतन का सिलसिला कुछ और चलना चाहिए

फूल बन कर जो जिया वो यहाँ मसला गया
जीस्त को फौलाद के साँचे में ढलना चाहिए

छिनता हो जब तुम्हारा हक कोई उस वक़्त तो
आँख से आँसू नहीं शोला निकलना चाहिए

दिल जवां, सपने जवाँ, मौसम जवाँ, शब भी जवाँ
तुझको मुझसे इस समय सूने में मिलना चाहिए

तमाम उम्र मैं इक अजनबी के घर में रहा।
सफर न करते हुए भी किसी सफर में रहा।

वो जिस्म ही था जो भटका किया जमाने में,
हृदय तो मेरा हमेशा तेरी डगर में रहा।

तू ढूँढ़ता था जिसे जा के बृज के गोकुल में,
वो श्याम तो किसी मीरा की चश्मे–तर में रहा।

वो और ही थे जिन्हें थी ख़बर सितारों की,
मेरा ये देश तो रोटी की ही ख़बर में रहा।

हजारों रत्न थे उस जौहरी की झोली में,
उसे कुछ भी न मिला जो अगर–मगर में रहा।

राष्ट्रीय सहारा

24.06.2022

जामिया कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला आयोजित

नई दिल्ली, (एसएनबी)। जामिया मिल्लिया इस्लामिया के राजभाषा हिन्दी प्रकोष्ठ की ओर से बृहस्पतिवार को हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई। जामिया कर्मियों के लिए हिंदी कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य जामिया के कर्मचारियों को सरल तरीके से हिंदी टाइपिंग का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना था ताकि कार्यालय में हिंदी का काम करने में स्टाफ को आसानी हो और वह निरंतर अपने कार्यालय के काम में हिंदी का ज्यादा अच्छे ढंग से उपयोग भी कर सकें। कार्यशाला का आयोजन जामिया के ही एफटीके सूचना प्रौद्योगिकी केंद्र (सीआईटी) की कंप्यूटर लैब में किया गया। डॉ. शाने काजिम नकवी ने सीआईटी के बारे में चर्चा करते हुए विषय से संबंधित अपने अनुभव साझा किए। विषय विशेषज्ञ के तौर पर जामिया के सिस्टम एनालिस्ट अजीजउल्लाह खान को आमंत्रित किया गया था, जिन्होंने प्रतिभागियों को विषय से संबंधित बारीकियों और उनके अनुप्रयोगों से अवगत कराया। इसमें प्रतिभागियों ने गहरी और गंभीर रुचि व्यक्त की, जोकि बीच-बीच में जारी प्रश्नोत्तर सत्र के दौरान प्रतिभागियों के प्रश्नों के माध्यम से स्पष्ट रूप से दिखाई दी।

हिन्दुस्तान

24.06.2022

जामिया में कार्यशाला का आयोजन किया

नई दिल्ली। जामिया मिल्लिया इस्लामिया के राजभाषा हिन्दी प्रकोष्ठ में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य कर्मचारियों को सरल तरीके से हिंदी टाइपिंग का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना था। कार्यशाला जामिया की सीआईटी की कंप्यूटर लैब में लगाई गई।

NAVODAYA TIMES

नवोदय टाइम्स

नई दिल्ली • शुक्रवार • 17 मई, 2019

'कार्यालयों में हिंदी का हो अधिकाधिक प्रयोग'

जामिया मिलिया इस्लामिया की हिंदी पत्रिका जामिया दर्पण का हुआ लोकार्पण

नई दिल्ली, 16 मई (नवोदय टाइम्स): जामिया मिलिया इस्लामिया की हिंदी पत्रिका जामिया दर्पण के द्वितीय अंक का लोकार्पण करते हुए विश्वविद्यालय की कुलपति व लोकार्पण समारोह की मुख्य अतिथि प्रो. नजमा अख्तर ने हिंदी भाषा की महत्ता पर प्रकाश डाला। इसके अलावा उन्होंने कार्यालयों के कार्यों में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए सबको प्रेरित किया। जामिया दर्पण के लोकार्पण के समय मानविकी एवं भाषा संकाय के डीन और कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रो. वहाजुद्दीन अल्वी एवं कुलसचिव ए.पी. सिद्दीकी भी मौजूद रहे। काव्य गोष्ठी में डॉ. दिलीप कुमार शाक्य, डॉ. रश्मि भारद्वाज, रणविजय राव, तृप्ति अग्रवाल, शशि किरण एवं मनोज भावुक ने अपनी कविताओं का काव्य पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन जामिया के हिंदी अधिकारी एवं जामिया दर्पण के संपादक डॉ. राजेश कुमार द्वारा किया गया। कार्यक्रम में राजकुमार अनुरागी ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि तथा सभी आमंत्रित कवियों को स्मृति चिह्न भेंट किया।

नवोदय टाइम्स

24.06.2022

जामिया कर्मचारियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया

नई दिल्ली, 23 जून (ब्यूरो): जामिया मिल्लिया इस्लामिया के राजभाषा हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा वीरवार को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। जामिया कर्मचारियों (एलडीसी/यूडीसी) हेतु हिंदी कार्यशाला विषयक कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य जामिया के कर्मचारियों को सरल तरीके से हिंदी टाइपिंग का व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना था।

राष्ट्रीय सहारा

नई दिल्ली। शुक्रवार • 17 मई • 2019

जामिया कुलपति ने हिंदी के इस्तेमाल के लिए किया प्रेरित

नई दिल्ली (एसएनबी)। जामिया मिल्लिया इस्लामिया की कुलपति प्रो. नजमा अख्तर ने विश्वविद्यालय कर्मियों को हिन्दी का कार्यालय के काम में अधिक से अधिक प्रयोग करने की सलाह दी है। जामिया में [illegible] हिन्दी पत्रिका जामिया दर्पण के द्वितीय अंक का लोकार्पण करते विश्वविद्यालय की कुलपति ने यह सलाह दी। पत्रिका का लोकार्पण प्रो. नजमा अख्तर ने मानविकी एवं भाषा संकाय के डीन प्रो. वहाजुद्दीन अल्वी एवं कुलसचिव एपी सिद्दीकी (आईपीएस) की मौजूदगी में किया। पत्रिका के लोकार्पण के उपरांत एक काव्य गोष्ठी का भी आयोजन किया गया। लोकार्पण समारोह एवं काव्य गोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के तौर पर मानविकी एवं भाषा संकाय के डीन प्रो. वहाजुद्दीन अल्वी ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। इस अवसर पर कुलपति ने हिन्दी भाषा की महत्ता पर प्रकाश डाला और कार्यालयी कार्यों में हिन्दी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए सबको प्रेरित किया। काव्य गोष्ठी में डॉ. दिलीप कुमार शाक्य, डॉ. रश्मि भारद्वाज, रणविजय राव, तृप्ति अग्रवाल, शशि किरण एवं मनोज भावुक ने अपनी कविताओं का काव्य पाठ किया। कार्यक्रम का संचालन जामिया के हिन्दी अधिकारी एवं जामिया दर्पण के संपादक डॉ. राजेश कुमार मांझी द्वारा किया गया।

हिन्दी पत्रिका जामिया दर्पण के द्वितीय अंक का लोकार्पण

नवोदय टाइम्स

गुरुवार • 26 सितम्बर, 2019

जामिया में प्रतिभागी हुए सम्मानित

नई दिल्ली, 25 सितम्बर (ब्यूरो): जामिया मिल्लिया इस्लामिया (जेएमआई) के राजभाषा हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा हिंदी सप्ताह समापन समारोह का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि विश्वविद्यालय के कुलसचिव ए.पी. सिद्दीकी (आईपीएस) थे। समापन समारोह में पूरे सप्ताह में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

समापन समारोह में डीन, मानविकी एवं भाषा संकाय प्रोफेसर [illegible], डीन दन्त चिकित्सा संकाय डॉ. [illegible], अध्यक्ष हिंदी विभाग प्रो. [illegible] ने प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए। प्रतियोगिताओं में निबंध लेखन प्रतियोगिता, पत्र-लेखन प्रतियोगिता तथा आशु-भाषण प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त करने वाले कर्मचारियों को क्रमशः ₹ 2500/-, ₹ 2000/-, ₹ 1500, ₹ 1000/- एवं प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

जनसत्ता, 20 सितंबर, 2019

जामिया में हिंदी को लेकर तकनीकी कार्यशाला

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 19 सितंबर।

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में जामिया मिल्लिया इस्लामिया के राजभाषा हिंदी प्रकोष्ठ ने तकनीकी कार्यशाला का आयोजन किया। इसके अंतर्गत माइक्रोसॉफ्ट के स्थानीयकरण निदेशक बालेन्दु शर्मा दाधीच ने भाषा प्रौद्योगिकी, मशीन अनुवाद, हिंदी टाइपिंग टूल्स, भाषा टूल्स आदि विषयों की विस्तृत जानकारी सभी प्रतिभागियों को दी। बाद में प्रशासनिक कर्मचारियों के लिए निबंध प्रतियोगिता और आशु-भाषण प्रतियोगिता तथा चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के लिए पत्र-लेखन प्रतियोगिता और आशु-भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

कुलसचिव, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, मौलाना मोहम्मद अली जौहर मार्ग, नई दिल्ली–110025 द्वारा प्रकाशित